चुटकुला-शतकम्

(संस्कृत-हिन्दी)

द्वितीय भाग

(इस पुस्तक की समस्त आय संस्कृत सेवार्थ है)
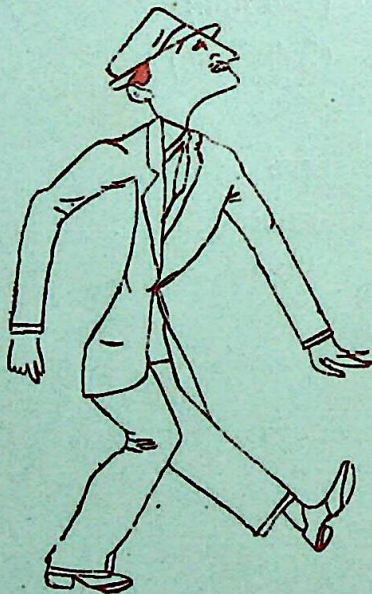
लेखन, संकलन : आचार्य रामदयालु

स्थान दिल्ली (पंजी०)
लकावाद विस्तार, नव दिल्ली-19

मूल्य 5-00

संस्कृत सेवा प्रकाशन सूची

दिल्ली संस्कृतज्ञ निर्देशिका	250/-
हिन्दी संस्कृत धातुकोषः	65/-
चुटकुला शतकम् (प्रथम भागः)	5/-
„ „ (द्वितीय भागः)	5/-
क्रीडा पंचविंशतिः	2/-
बाल संस्कृत वार्तालापः	2/-
विशेष संस्कृत वार्तालापः	5/-
संस्कृत सम्भाषण विधाः	5/-
कृण्वस्ति संस्कृतम्	10/-
दशाब्दी स्मारिका	10/-
निरुक्त निर्वचनिका	2/-
भाष्य भूमिका सारः	3/-
विभिन्न चार्टपत्राणि	5 --10/-
संस्कृत पद-पदांश चित्रम्	1/-
कारक विभक्ति ज्ञान चित्रम्	3/-
परस्मैपद षट्लकार प्रत्यय चित्रम्	2/-
परस्मैपद प्रत्यायार्थं चित्रम् (बृहत्)	10/-
आत्मनेपद प्रत्ययार्थं-चित्रम्	10/-
मुख्य स्वरान्त रूपार्थं-चित्रम्	10/-

हिन्दी भाषया समन्वितम्

चुटकुला-शतकम्

(1) एकः गोपालः स्व ग्राहकम् अवदत् - श्वः दुग्धस्य मूल्यं रूप्यकमेकं प्रतिकिलोग्रामं वर्धिष्यते । ग्राहकः (आश्चर्यचकितः सन्) - कथम्, ईदृशा का वार्ता यत् रूप्यकमेकं मूल्यं वर्धिष्यते ? गोपालः - प्रथमस्तु दुग्धानयन काले उपरिष्टात् वर्षा एव न भवति ग्राहकः - भो वर्षा, दुग्धम् च एतां कां वार्ता भणसि ? गोपालः - वाबू महोदय ! अहं तथ्यं भणामि । वर्षा न पतनेन अस्माकं दुग्धं न्यूनं जायते अन्यच्च - । ग्राहकः - अन्यत् किम् गोपालः - अद्यत्वे नगरे जलावरोध कारणेन जलम् एव न मिलति । ग्राहकः - त्वमपि वहुलः । जलावरोध कारणेन दुग्धं महार्घं कथं स्थादिति ? गोपालः कथन्न महार्घं भविष्यति महाशयः ? जलावरोध - दिवसेषु विना जलमिश्रितं शुद्धं दुग्धम् एव विक्रेयं भवेदिति कारणात् ।

(2) एकस्मिन् दिने एकः गोपालः दुग्धे मिश्रणाय कुत्रापि जलम् न अलभत । अन्ते सः स्व नगर ग्राहकेभ्यः विना जल मिश्रितं शुद्धं दुग्धमेव अयच्छत् । द्वितीये दिवसे यदा दुग्धं दातुम् अगच्छत् तर्हि केचित् ग्राहकाः तेन कलहम् अकुर्वन् - यतः त्वं ह्यो नःअशुद्धं दुग्धम् अयच्छः । तेन अस्माकम् उदरे पीडा जाता । वालाः अस्वस्थाः अभवन् । अशुद्ध दुग्धस्य विक्रय कारणेन वयं त्वाम् आरक्षि गृहं प्रेषयिष्यामः पणान् अपि न दास्यामः इति । गोपालः मनसि अचिन्तयत् - शुद्ध दुग्धदानस्य फलमेतत् । पश्चात् अवदत् - वावू महाशयाः ! अहं तु भवत्स्वास्थ्य विषये सदैव चिन्तयामि । अद्य क्षम्य-ताम् । श्वस्तने भवत्स्वास्थ्यानुकूलं शुद्धं दुग्धमेव दास्यामि । अन्येद्युः दुग्धे जलार्धं सम्मेल्य अयच्छत्, सर्वेषां च स्वास्थ्यं समीची-नम् अभवत् ।

(3) एकः ग्राहकः (नापितम्) - ठक्कुर महाशय ! अहम् अतीव शीघ्रतायाम् अस्मि । मे केशान् शीघ्रं शीघ्रं कर्तय। नापितः - चिन्तां न कुरु महोदय ! अहं ते केशान् चिरात् प्रागेव कर्तयामि । ग्राहकः - मयोक्तम्-अहम् अति शीघ्रतायाम् अस्मि । नापितः - महोदय अहमपि चिरक्रियो नास्मि । उपविशतु पश्यतु च निमेषेणैव मम

(1) एक ग्वाले ने अपने ग्राहक से कहा कि कल से दूध का दाम एक रुपया किलो बढ़ जायगा। ग्राहक (चौंकता हुआ)—क्यों ऐसी क्या बात है कि 1 रु. दाम बढ़ जायगा? ग्वाला—एक तो हमारे दूध लाते समय ऊपर से पानी नहीं बरसता। ग्राहक—अरे बारिस और दूध ये तुम क्या बात कर रहे हो? ग्वाला—बाबूजी मैं ठीक कह रहा हूँ। बारिस नहीं पड़ने से हमारा दूध कम रह जाता है। और दूसरे। ग्राहक-और दूसरे क्या? ग्वाला—और दूसरे आजकल नगर में पानी की हड़ताल होने से पानी ही नहीं मिल पाता। ग्राहक—तुम भी खूब हो। पानी की हड़ताल होने से दूध कैसे महंगा हो जायगा। ग्वाला—क्यों नहीं मंहगा होगा साहब? पानी की हड़ताल के दिनों में बिना पानी मिलाए खालिस दूध जो बेचना पड़ेगा।

(2) एक दिन एक ग्वाले को दूध में मिलाने के लिये कहीं पानी नहीं मिल सका। हारकर वह अपने शहरी ग्राहकों को बिना पानी मिला खालिस दूध ही दे गया। दूसरे दिन दूध देने गया तो कई ग्राहक उससे लड़ने लगे कि तुम कल हमें नकली दूध दे गए। उससे हमारे पेट में दर्द हो गया, बच्चे बीमार हो गए। नकली दूध बेचने पर हम तुम्हें पुलिस से पकड़वा देंगे और तुम्हारे पैसे भी नहीं देंगे, इत्यादि। ग्वाला (अपने मन में सोचता हुआ कि यह असली दूध देने का फल है) बोला—बाबू जी मुझे तो आपकी सेहत का हमेशा ही ख्याल रहता है। आज मुझे माफ कर दीजिये, कल से आपकी सेहत के मुताबिक असली दूध देकर जाऊँगा। दूसरे दिन से दूध में आधा पानी मिलाकर देने लगा और सबकी सेहत ठीक हो गई।

(3) एक ग्राहक (नाई से)—ठाकुर साहब। मुझे बहुत जल्दी है, मेरे बाल जल्दी-जल्दी काट दो। नाई—आप चिन्ता न करें साहब! मैं आपके बाल आनन फानन में ही काट देता हूँ। ग्राहक—मैंने कहा न मुझे बहुत जल्दी है। नाई—देरी करने का समय मेरे पास भी नहीं है महोदय! आप बैठिये और पलक झपकते ही देखिये कि मेरी कैंची कैसे फ्रन्टियर मेल की

कर्तनी 'फ्रण्टियरमेल' शकटीमिव कथं चलति। ग्राहकः - एषः उपविष्टोऽस्मि। नापितः - परं भवत्पार्श्वे समयः नास्ति अत एव पणानपि अधुनैव निःसार्य यच्छतु। ग्राहकः - नितान्तम् उचितम्। पणान् गृहणातु। नापितः - तदा जानातु कार्यमपि सम्पन्नमेव। एकः द्वौ त्रय इति। उत्तिष्ठतु महाशय! ग्राहकः - वाह भ्रात! साधु/आदर्शं तावत् आनय। दृष्ट्वा - ऐं एतत् किम् ?मध्ये सर्वे केशाः त्यक्ताः। नापितः अहम् पूर्वमेव अकथयम् यत् फ्रन्टियर मेल इव कर्तनी धाविष्यति। फ्रण्टियर मेल अपि मध्ये वहून् स्थेयान त्यजति।

(4) एकः अध्यापकः (छात्रान् प्रति)...बालाः वदत, यत्र सर्वाधिका वर्षा भवति तत्र किम् अधिकं जायते। कश्चिदेकः - महोदय! मया तु एतत् पठितम् नैव। द्वितीयः - पठनकाले माम् निद्रा समागता। तृतीयः - भवान् एतम् पाठम् पुनरेव पाठयतु इति। चतुर्थः - अहमपि एतस्य एव समर्थनं करोमीति। अध्यापकः - ननु मूर्खा एव यूयं सर्वे। यः अस्य प्रश्नस्य उत्तरं दास्यति तस्मै पुरस्कारं मिलिष्यति (सर्वे तूष्णीकाः) अध्यापकः - भो पवन! त्वं वद। त्वमेव सर्वेषु छात्रेषु चतुरः। पवनः - भवान् कथयति अत एव वदामि। किं पारितोषिकं मह्यं दास्यति ? अध्यापकः - भो कथन्न ? पारितोषिकं गृहाण पूर्वमेव। अधुना वद, अधिक वर्षायाः स्थाने किमधिकं जायते ? पवनः - अध्यापक महोदय ? तत्र तु सर्वाधिकः पङ्कः एव जायते।

(5) अन्तिम काले गल-मृत्यु-पटले आरुह्यमानम् अपराधिनं कोऽपि अधिकारी अपृच्छत् - किं तव कापि अन्तिमेच्छा वर्तते ? अपराधी - अस्ति, विश्वसिमि चाहं यद् भवान् ताम् अवश्यमेव पूरयिष्यति। अधिकारी - भो भ्रातः! कथन्न। तवान्तिमा अभिलाषा पूरणीया एव, इत्यस्माकं कर्तव्यम् अस्ति। अपराधी - यदि भवान् एतावत् आश्वासयति तर्हि अहम् ताम् कथयामि एव। अधिकारी - आम् आम् कथन्न, शीघ्रं वद। तवेच्छाम् अवश्यमेव पूर-

तरह चलती है। ग्राहक - लो बैठ गया। नाई - लेकिन साहब आपके पास इतना टाइम नहीं है इसलिये पैसे भी अभी निकाल कर दे दीजिये। ग्राहक-- बिलकुल ठीक, ये लो पैसे। नाई - बस तो समझो काम भी हो गया। एक दो, तीन। उठ जाइये साहब। ग्राहक - भई वाह शाबास। जरा शीशा तो दिखाना। चौंकते हुए...ऐं यह क्या ? बीच-बीच में इतने सारे बाल छोड़ दिये हैं। नाई - साहब ! मैंने पहले ही कह दिया था कि फ्रन्टियर मेल की तरह कैंची दौड़ेगी। फ्रन्टियर मेल भी तो बीच-बीच में बहुत से स्टेशन छोड़ जाती है।

(4) अध्यापक (छात्रों से) - बच्चो बताओ जहां सबसे अधिक वर्षा होती है वहां क्या चीज अधिक पैदा होती है ? कोई एक - जी मैंने तो यह पढ़ा ही नहीं। दूसरा - जी पढ़ते समय मुझे नींद आ गई थी। तीसरा - जी आप इस पाठ को एक बार फिर से पढ़ा दीजिये। चौथा - जी मैं भी पहली बात का समर्थन करता हूँ। अध्यापक - तुम सभी मूर्ख हो क्या ? जो इस प्रश्न का उत्तर देगा उसे इनाम मिलेगा। (सब चुप) अध्यापक - अरे पवन तुम्हीं बताओ तुम तो इन सब में होशियार हो। पवन मास्टरजी आप कहते हैं तो मैं बता देता हूँ, इनाम देंगे न मुझे ? अध्यापक - अरे क्यों नहीं ? इनाम ये लो पहले ही। अब बताओ अधिक वर्षा वाले स्थान पर सबसे अधिक क्या होती है। पवन-जी, मास्टर जी वहां तो सबसे अधिक कीचड़ ही पैदा होती है।

(5) आखिरी समय फाँसी के तख्ते पर चढ़ने वाले अपराधी से एक बड़े अधिकारी ने पूछा - क्या तुम्हारी कोई अन्तिम इच्छा है ? अपराधी हाँ, है, और मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप उसे अवश्य पूरा करेंगे। अधिकारी - अरे भाई क्यों नहीं ? तुम्हारी आखिरी इच्छा पूरा करना हमारा कर्तव्य है ! अपराधी - आप इतना आश्वासन दे रहे हैं तो साहब बता ही देता हूँ। अधिकारी - हाँ हाँ डरो नहीं, जल्दी से बताओ। तुम्हारी इच्छा अवश्य पूरी की जायगी। अपराधी - साहब ! मेरी यही अन्तिम इच्छा है

यिष्यामि । अपराधी - महोदय ! मे अन्तिमा इच्छाऽस्ति यत् भवान् किञ्चित् कालं यावत् मम स्थाने आगच्छतु ।

(6) पिता (स्वपुत्रम्) - राजू अद्य तवाध्यापकः त्वद् विषये प्रतिवेदनं प्रेषितम् अस्ति । राजू-पितृ-महोदय ! एतत् सर्वथा-मिथ्याऽस्ति । मया लेखने पठने वा त्रुटिः न कृता, केनापि बालेन सह कलहं गालिदानं वा न कृतम्, अध्यापकेन अभद्राचरणमपि न कृतम्, कस्यचिदपि वस्तु न चोरितम्, न चाप्यहम् विद्या ऽध्ययन-मध्ये अधावम् । पुनः मदीय विषये प्रतिवेदनं कथमिति ? पिता - एतादृशेषु तु किमपि नास्ति, अन्यदेव प्रतिवेदनम् अस्ति । राजू - पितः भवान् मंस्यति यत् विद्यालयात् आगतं प्रतिवेदनं विद्यालय - सम्वन्धि - एव भविष्यति । पिता - नितान्तं समीचीनम् । राजू - तर्हि विद्यालये गत्वा अद्यत्वे मया काऽपि अव्यवस्था न कृता । पिता - कथमिव ? राजू - यतोऽहं चतुर्दिनाद् आरभ्य विद्यालये एव न अगमम् इति ।

(7) चन्दनः यावदेव परीक्षां दत्त्वा गृहे प्राप्तः तावदेव पिता अपृच्छत् - चन्दन ! पत्रं कीदृशम् अभवत् ? चन्दनः - पितः - पत्रम् अतीव समीचीनम् आसीत् । आह्लादः प्राप्तः । पिता - वाह, साधु, किम् सर्वे प्रश्नाः सम्यक् कृताः ? चन्दनः - केवलम् एकस्मिन्नेव उत्तरे महती त्रुटिः अभवत् । पिता - नास्ति कापि वार्ता । सर्व-स्मिन् पत्रे एकार्धा त्रुटिस्तु भवत्येव । शेष प्रश्नाः तु सम्यक् कृताः ? चन्दनः - आम् कथन्न पितः । अन्ये प्रश्नास्तु मया कृताः एव न । पुनः त्रुटिः कथम् स्यादति ।

(8) एकः जनः स्वात्मानं भृशं प्रशंसयन् द्वितीयं सम्बन्धिनम् अवदत् - भो भ्रातः । त्वम् न जानासि यदहं तत्र कम्पन्याम् अत्युच्च - स्थाने कार्यरतोऽस्मि । द्वितीयः - किम् सत्यमेव भवान् अति महान् सञ्जातः। प्रथमः - आम्, न केवलम् महान् उच्च-

कि आप कुछ समय के लिये मेरे स्थान पर आ जाइये ।

(6) पिता (अपने पुत्र से) - धनराज ! आज तुम्हारे अध्यापक ने तुम्हारे विषय में शिकायत भेजी है ।

धनराज - पिताजी ! यह झूठ है विलकुल झूठ है, मैंने लिखने पढ़ने में कोई गलती नहीं की, किसी लड़के से लड़ाई या गालीगलौज भी नहीं किया, अध्यापक से वुरा वर्ताव नहीं किया, किसी की चीज भी नहीं चुराई, मैं वीच में स्कूल से कहीं भागा भी नहीं, तो फिर मेरी कोई शिकायत कैसे हो सकती है । पिता - वेटे शिकायतें ये नहीं, और हैं । वेटा - पिताजी आप यह तो मानेंगे कि स्कूल से आने वाली शिकायत स्कूल सम्वन्धी ही होंगी । पिता - हां विलकुल ठीक है । वेटा - तो स्कूल में मैंने आजकल में कोई गड़वड़ी नहीं की है । पिता - वह कैसे ? वेटा - वह इसलिये कि मैं चार दिन से स्कूल ही नहीं गया ।

(7) चन्दन जैसे ही परीक्षा देकर आया, उसके पिता ने पूछा - कैसा पर्चा गया ? चन्दन - पिताजी पर्चा वहुत अच्छा हुआ मजा आ गया । पिता - वाह शावाश ! क्या सभी प्रश्न ठीक कर दिये ? चन्दन - केवल एक प्रश्न में वड़ी गलती हो गई । पिता - कोई वात नहीं वेटे ! कोई वात नहीं । सारे पर्चे में एकाध भूल तो हो ही जाती है । वाकी सवाल तो सव ठीक कर दिये ना ? चन्दन - क्यों नहीं पिताजी क्यों नहीं । वाकी सव सवाल तो पर्चे पर ही ठीक छपे थे । इसलिये मैं उनका क्या जवाव देता ? मैंने छोड़ दिये ।

(8) एक आदमी अपने दूसरे सम्वन्धी से अपनी डींगें मारते हुए कह रहा था - अरे भाई ! तुम्हें क्या पता, मैं उस कम्पनी में वड़े ऊंचे स्थान (पद) पर हूं । दूसरा साथी - क्या सचमुच ही तुम वहुत वड़े वन गए हो । पहला - हाँ, केवल ऊँचा स्थान ही नहीं, मेरे नीचे हजारों लोग काम करते

स्थानम्, अपिच मदीय नीचैः सहस्रसो जनाः कार्यं कुर्वन्ति। द्वितीयः - प्रतीयते भवान् तत्र महा प्रबन्धकः सञ्जातः। अस्तु ज्ञापय तावत्, तत्र भवान् कस्मिन् पदे नियुक्तः ? प्रथमः - भो भ्रातः अहं तत्र कस्मिन्नपि पदे नास्मि, अपितु तत्र सर्वोपरि तले कार्यं करोमि, अथ च अन्ये सहस्रः जनाः मत् निम्नतलेषु कार्यं कुर्वन्ति।

(9) एकः मनश्चलः नापितम् एत्य स्वस्य क्षौरात् पूर्वं नापितम् अवदत् - किं भो ! अधुनापर्यन्तं कियतम् क्षौरं कृतमिति। नापितः - बहूनां भाव ! मनश्चलः - तेषु के के अभवन् ? नापितः - महोदय ! तेषु राजा - दरिद्रः-लघुः-महान्तः एवम् अनेके जनाः मम पुरतः नत-मस्तकाः जाताः मनश्चलः - आम्, एवम्। एकां वार्ता ज्ञापय। नापितः - पृच्छतु महोदय। मनश्चलः - किं त्वया कदापि कस्यचिद् गर्दभस्य अपि क्षौरं कृतं नवा ? नापितः - महोदय ! अद्य पूर्वं तु कदापि एतादृशः अवसरः न प्राप्तः, परम् अधुनैव अवसरः हस्तगतः। अहम् एकस्य गर्दभस्य क्षौरं कर्तुम् उद्यतोऽस्ति। मनश्चलः - वाह भ्रातः वाह, गर्दभस्य क्षौरं कुरु। नापितः - तर्हि उपविशतु, शीघ्रम् उपविशतु।

(10) रामू (एकं स्व सहचरम्) अवदत् - अद्य मया नव संख्यकाः मक्षिकाः हताः तासु चतस्रः नरमक्षिकाः पञ्च च मातृ मक्षिकाः आसन्। सहचरः - एँ त्वम् कथं जानासि यत् तासु चतस्रः नर-मक्षिकाः आसन् पञ्च च मातृमक्षिकाः इति। रामू- एषा तु सरला एव वार्ता। सहचरः - कथं कथमिति। रामू - तासु चतस्रः पितृ महोदयस्य दुग्ध पात्रे भिनभिनायन्त स्म ताः नरमक्षिकाः, अन्याश्च पञ्च मातुः ओष्ठलेपे उत्पतन्ति स्म ताः मातृमक्षिकाः आसन्। सहचरः ...वाह भ्रातः वाह।

हैं। दूसरा - मालूम होता है, तुम वहां पर वड़े मैनेजर हो गए हो। अच्छा वताओ वहाँ तुम किस पद पर हो, पहला - अरे भाई मैं वहाँ किसी पद पर नहीं हूं। वल्कि सवसे ऊपर की मंजिल में काम करता हूं एवम् अन्य हजारों लोग मेरे नीचे की मंजिलों में काम करते हैं।

(9) एक मन चला नाई के पास गया और अपनी हजामत कराने से पहले नाई से वोला - क्यों भई अव तक कितनों की हजामत कर चुके हो? नाई - वहुतों की साहव! मनचला - उनमें कौन-कौन थे! नाई - साहव! राजा, रंक, छोटा-वड़ा इस प्रकार अनेक लोग मेरे सामने सिर झुका चुके हैं। मनचला - ऐसी वात है? अच्छा एक वात वताओ। नाई - पूछिये साहव। मनचला - क्या तुमने कभी किसी गधे की भी हजामत वनाई है या नहीं? नाई - साहव! आज से पहले तो कभी ऐसा मौका नहीं पड़ा, लेकिन हां अभी-अभी मौका हाथ लगा है। मैं एक गधे की हजामत करने की कोशिश कर रहा हूँ। मनचला - भई वाह, ठीक है कोशिश करो। नाई - अच्छा तो फिर वैठिये, जल्दी वैठिये।

(10) रामू ने अपने एक साथी से कहा - आज मैंने 9 मक्खियां मारीं उनमें से चार नर थीं और पाँच मादाएँ। साथी - हें तुम्हेंकैसे ज्ञात (मालूम) हुआ कि उनमें से चार नर थीं और पाँच मादाएँ। रामू - यह तो बड़ी आसान वात है। साथी - कैसे-कैसे? रामू - उनमें से चार तो पिता जी के दूध वाले गिलास पर भिनभिना रही थीं, वे नर थीं और पाँच माता जी की लिपस्टिक पर उड़ रही थीं, वे मादाएँ थीं। साथी - भई वाह।

(11) मोहनः - अरे भ्रातः सोहन ! मनाक् स्वं वातापूरण यन्त्रं तु देहि । अहम् स्व टायर नलिकायां वातापूरितम् इच्छामि । सोहनः - वातयन्त्रं तु गृहाण परं स्मरतु तस्मात् सर्वं वातं न समापय । मोहनः - किमुक्तं, सर्वं वातं न समापयेति । सोहनः - आम्, यन्त्रात् सर्वं वातम् यदि उद्गतम्, तर्हि मां जनकः ताडयिष्यति ।

(12) एकस्मिन् स्थाने मोटर चालन कक्षा चलति स्म । शिक्षकेण वाहन चालन विषये अनेकाः वार्ताः प्रबोधिताः । प्रशिक्षुभिः कृतानां शंकानां समाधानं कृतम् । तदा अन्ते अपृच्छत् यत् यदि कश्चिदपि सहसा वाहनस्य अग्रे आगच्छेत् तदा किं कर्तव्यम् ? तदा केचिद् अवदन्-यदस्माभिः कक्षातः गन्तव्यमिति । शिक्षकः - नैव, वाहने सपदि अवरोधः सन्धातव्यः । एकः अवदत् - किं महोदय, वाहने अवरोधः पूर्वमेव न भवति, यद् भवान् तदेव अवरोध-सन्धातुं वदति ।

(13) एकः सैनिकः भुशुण्डीं नीत्वा अहर्निशं प्रहरिकार्यं करोति स्म । एकस्मिन् दिवसे एकः बालकः तम् अकथयत् - यद् भवान् अतीव भीरुः प्रतीयते । सैनिकः - कथम्, अहम् भीरुः कथम् अस्मि? बालकः - भीरुः एव अस्ति, यतः अहर्निशं स्वरक्षार्थं भुशुण्डीं सह नीत्वा भ्रमति ।

(14) एकः जनः दुग्ध विक्रेतारम् अवदत् - भो दैनिकं दुग्धं शीघ्रमेव आनयतु, अस्माभिः कार्यालयं गमनं भवति । विक्रेता - अहमपि शीघ्रमेव आनेतुं वाञ्छामि परं परवशः अस्मि । जनः - तुभ्यं का परवशताऽस्ति । दुग्धं किञ्चित्पूर्वं निस्सारय । विक्रेता - आम् महोदय, दुग्धं त्वहं पूर्वमेव निस्सारयामि परम् - । जनः - परं किमिति ? विक्रेता - महोदय, दुग्धं तु निस्सारयामि परं जलं कुतः निस्सारयसि ? [illegible] जलं तु नलात् आगच्छति ।

(11) मोहन - अरे भई सोहन ! जरा अपना हवा भरने का पम्प तो देना, मुझे अपने टायर में हवा भरनी है। सोहन - पम्प तो ले लो, मगर याद रखना, उसमें से सारी हवा खत्म न कर देना। मोहन - क्या कहा सारी खत्म न करना। सोहन - हाँ, पम्प से सारी हवा निकल गई तो मुझे पिता जी मारेंगे।

(12) एक स्थान पर ड्राइविंग स्कूल की कक्षा चल रही थी। अध्यापक ने मोटर चलाने सम्बन्धी बहुत सी बातें समझाई। लड़कों के बहुत सी शंकाओं का समाधान किया। तब अन्त में पूछा कि कोई अचानक मोटर के सामने आ जाए तब क्या करना चाहिये। तब कइयों ने कहा कि हमें उससे बचकर निकल जाना चाहिये। अध्यापक - नहीं, मोटर में तुरन्त ब्रेक लगाना चाहिये। एक छात्र - क्यों साहब ! क्या मोटरों में पहले से ब्रेक लगे नहीं होते, जो आप उसी समय तुरन्त ब्रेक लगाने को बोलते हैं।

(13) एक सिपाही बन्दूक लिये सारादिन और रात पहरा दे रहा था। एक दिन एक बालक ने उससे कहा - तुम बहुत डरपोक मालूम होते हो। सिपाही - मैं डरपोक कैसे हूँ ? बालक - डरपोक तो हो ही, जो दिन रात अपने साथ बन्दूक लिये फिरते हो।

(14) एक आदमी ग्वाले से - भई दूध जरा जल्दी लाया करो, हमें दफ्तर जल्दी पहुँचना होता है। ग्वाला - साहब ! जल्दी तो मैं भी लाना चाहता हूँ पर क्या करूं मजबूर हूँ। आदमी - तुम्हें क्या मजबूरी है ? दूध थोड़ा पहले निकाल लिया करो। ग्वाला - हां साहब ! दूध तो पहले ही निकाल लिया करता हूं परन्तु। आदमी - परन्तु क्या ? ग्वाला - जी दूध तो निकाल लेता हूँ परन्तु पानी कहां से निकालूं। कम्बख्त नल तो देर से आता है।

(15) राजू स्वमित्रम् - यदाऽहं प्रतिदिनं प्रातःकाले उत्तिष्ठानि, तदा मां होरार्धं यावत् तन्द्रा आवृणोति, मित्र वद किं करवाणि ? मित्रम् - किं मुख प्रक्षालनेऽपि तन्द्रा न याति ? राजू - न तु । मया वारं वारं प्रयत्नं कृतम्, पुनरपि प्रातः होरार्धं यावत् तन्द्रा भवत्येव । मित्रम् - तदा कपमात्रं चायपानं कुरु । राजू - मया एतदपि कृत्वा अपश्यम् तन्द्रा होरार्धं तिष्ठत्येव । मित्रम् - तदा एवम् कुरु यदा तन्द्रा भवेत् ततः होरार्धं पश्चाद् उत्तिष्ठ ।

(16) एकः चिकित्सकः (स्वं रोगिणम्) - दृष्टः त्वया ममौषधि चमत्कारः ? तव कासा पूर्वस्मात् उत्तमा अभवत् । रोगी - आम् वैद्य महोदय ! भवान् सत्यं कथयति, मम कासा पूर्वस्मात् अति....उत्तमा अभवत् । पुनः अति... उत्तमा भवेत् कथन्न । यदा अहम् पूर्णं रात्रि पर्यन्तं कासायाः अभ्यासम् अकुर्वम् । अतएव तु अधुना अत्युच्च रूपेण कासयामि ।

(17) प्रथमं मित्रं द्वितीयम् अवदत् - भ्रातः वाह्, किं परिधानं धारितम् ? अधस्तु हरितरागस्य सूतः उपरि च रक्तरागस्य टाइ-वस्त्रम् । किमिव संयोजनं कृतं मे मित्रेण ? द्वितीयम् - किं सत्यमेव तुभ्यं मे सूतः अति रुचिकरं लगति । प्रथमम् - कथन्न मित्र ! त्वया तु प्रकृतिमपि नीचैः कृतम् । द्वितीयम् - अहं किमिव प्रतीये येन प्रकृतिरपि नीचैः भूतेति । प्रथमम् - अरे भ्रातः ! नीचैः हरित रागस्य सूतः उपरि च टाइवस्त्रेण त्वम् नितान्तं शुक इव प्रतिभासि ।

(18) प्रथमः छात्रः (द्वितीयम्) - वद सर्वाधिकान् अण्डान् का ददाति । द्वितीयः - कुक्कुटी एव सर्वाधिकान् अण्डान् दातुं समर्था अन्या का दास्यति ? प्रथमः - नैव, सर्वाधिकान् अण्डान् मम शिक्षिका ददाति । द्वितीयः - अरे, त्वमेवं किम् कथयसि यत् शिक्षिका अण्डान् ददाति । प्रथमः - आम् आम् अहं सत्यं कथयामि । पश्य एताम् मे गणितस्य उत्तर पुस्तिकाम् । अस्याम् अण्डानेव [illegible]

(15) राजू अपने दोस्त से जव मैं प्रतिदिन सुवह उठता हूं। तो मुझ पर आधे घण्टे तक वरावर सुस्ती छाई रहती है। मित्र। वताओ क्या करूँ? मित्र - क्या मुह धोने पर सुस्ती नहीं जाती? राजू - नहीं तो। मैंने कई वार प्रयत्न किया फिर भी सुवह आधे घण्टे तक सुस्ती वनी ही रहती है। मित्र - तो एक कप चाय पी लिया करो। राजू - मैंने यह भी करके देख लिया। सुस्ती आधा घण्टा वरावर रहती हैं। मित्र - तो ऐसा करो - जव सुस्ती रहती है उससे आधा घण्टा पीछे उठा करो।

(16) एक हकीम (अपने एक रोगी से) - देखा मेरी दवाई का कमाल तुम्हारी खांसी पहले से अच्छी हो गई न? रोगी - हाँ हकीम जी, आप ठीक कहते हैं। मेरी खाँसी पहले से कहीं वहुत ज्यादा अच्छी हो गई है। और फिर ज्यादा अच्छी होती भी क्यों न? मैं रातभर खाँसने का अभ्यास जो करता रहा हूँ, इसी लिये अव वहुत अच्छी तरह खांस रहा हूँ।

(17) पहला मित्र दूसरे से) - भई वाह क्या सूट पहना है? नीचे तो हरारंग का सूट और ऊपर लालरंग की टाई। क्या मैच मिलाया है मेरे यारने। दूसरा मित्र - क्या सचमुच तुम्हें मेरा सूट वहुत अच्छा लगा? पहला - क्यों नहीं यार, तुमने तो कुदरत को भी मात कर दिया। दूसरा - मैं कैसा लगता हूँ जो कुदरत को मात कर दिया? पहला - अरे भाई! नीचे हरा सूट और ऊपर लालरंग की टाई में तुम विलकुल तोते जैसे लगते हो।

(18) एक छात्र (दूसरे से) - वताओ सबसे अधिक अण्डे कौन देती है। दूसरा - मुर्गी ही सबसे अधिक अण्डे दे सकसी है और कौन देगी? पहला छात्र - नहीं, सवसे अधिक अण्डे मेरी मास्टरनी देती है। दूसरा - अरे तुम ये क्या कहते हो? मास्टरनी देती है? पहला - हाँ हाँ मैं ठीक कहता हूँ। ये देखो मेरी गणित की कापी पर अण्डे ही अण्डे दे रखे हैं।

(19) एकः वयस्यः अपरं वयस्यं परिहासे पत्रम् अलिखत् - यद् अधुना मे स्वास्थ्यं सर्वथा समीचीनम् अस्ति त्वम् कामपि चिन्तां न कुरु। द्वितीयः वयस्यः अपि तत् पत्रं पठित्वा परिहासे इष्टिकायाः उत्तरम् पाषाणेन अयच्छत्। सः वस्त्रे संसीव्य एका गुरुतरा वी.पी. तस्मै मित्राय अप्रैषयत्। सः वयस्यः ताम् 51) रु० दत्त्वा गृहीता। उद्घाटने तस्याम् एकः गुरुतरः स्थूलः पाषाणः अमिलत्। पाषाणेन साकम् आगतं पत्रे लिखितम् आसीत् - तव कुशल पत्र पठित्वा मम शिरसः एतावन्मात्रं भारः अवतरितः। धन्यवादः।

(20) एकः गोपालः स्वां गां वत्सं च कञ्चित् ग्रामान्तरं नयति स्म। मार्गे एकः सैनिकः गोपालम् अपृच्छत् - रे गोपाल ! एतौ गो - वत्सौ कस्य स्तः ? गोपालः - श्रीमान् गौः कस्य अस्ति इति तु अहम् न जानामि। परं वत्सः कस्येति अहम् अवश्यं वस्तुं शक्नोमि, सैनिकः - अस्तु एतदेव वद, वत्सः कस्येति ? गोपालः - महोदय ! वत्सस्तु अस्याः एव धेनोः अस्ति।

(21) एकः छात्रः धावित्वा उच्छ्वसन् एकं चिकित्सकम् अगच्छत् अपृच्छत् च - चिकित्सक महोदय ! शीघ्रम् किञ्चिद् उपचारं कुरु। मम नेत्रे विकृते जाते, ताभ्यां किमपि पठयते नैव। चिकित्सकः अचिरं तस्य नेत्रयोः निरीक्षणं कृत्वा अवदत् - भवन्नेत्रे तु नितान्तं समीचीने स्तः। सः छात्रः अवदत् - न, चिकित्सक महोदय ! यदि मम नेत्रयोः दृष्टिः विकृता न अभविष्यत् तर्हि समाचार पत्रे मे परीक्षाङ्कः कथं न अदृश्यत।

(22) एकः विद्यालय-शिक्षकः बालकान् अध्यापयन् मध्ये एव अमुह्यत्। छात्राः तम् रिक्षायां उपवेशयित्वा चिकित्सालयम् अनयन्। चिकित्सकः अध्यापकं निभाल्य छात्रान् अवदत् - युष्माकम् अध्यापकः उष्णता कारणात् अमुह्यत्, अन्यच्च अधुना शीघ्रमेव चेतनां प्राप्तुम् अपि सम्भावना अस्ति। छात्राः चिकित्सक-

(19) एक मित्र ने मजाक में अपने दूसरे मित्र को पत्र लिखा कि अब मेरी तबियत बिल्कुल ठीक है, तुम कोई चिन्ता न करना। दूसरे मित्र ने भी उस पत्र को पढ़कर ईंट का जवाब पत्थर से दिया। उसने कपड़े में सींकर एक बड़ी भारी वी.पी. उस मित्र के पास भेज दी। उसने उसे 51/-रु. देकर छुड़ाया। उसे खोलने पर एक भारी पत्थर निकला। उस पर लगी चिट पर लिखा था कि तुम्हारा पत्र पढ़ कर मेरे सिर पर से इतना बड़ा भारी बोझा उतर गया हैं, धन्यवाद।

(20) एक ग्वाला अपने गाय बछड़े को कहीं दूसरे गांव लेजा रहा था। रास्ते में एक सिपाही ने ग्वाले से पूछा - ए ! ग्वाले ये गाय बछड़े किसके हैं ? ग्वाला - हजूर ! गाय का तो मुझे पता नहीं किसकी है। हां बछड़ा जरूर बता सकता हूँ कि यह किसका है ? सिपाही - अच्छा ये बछड़ा ही बताओ किसका है ? ग्वाला - जी बछड़ा तो इसी गायका है।

(21) एक छात्र दौड़कर हांफता हुआ एक डाक्टर के पास पहुँचा और बोला कि डाक्टर साहब ! जल्दी ही कुछ इलाज कीजिये, मेरी आँखें खराब हो गई है उनसे कुछ भी पढ़ा ही नहीं जा रहा।

डाक्टर ने तुरन्त उसकी आँखों की जाँचकर कहा कि आपकी आखें तो बिलकुल ठीक हैं।

वह छात्र बोला - नहीं डाक्टर साहब मेरी आखों की दृष्टि खराब न होती तो अखबार में मुझे मेरा रोल नम्बर अवश्य दिख जाता।

(22) एक स्कूल के मास्टर जी बच्चों को पढ़ाते हुए बीच में ही बेहोश हो गए। छात्र उन्हें रिक्षा में बैठाकर हस्पताल ले गए। डाक्टर साहब ने मास्टर जी की देखभाल करने वाले छात्रों से कहा - तुम्हारे मास्टर जी गर्मी के कारण बेहोश हो गए हैं और अभी जल्दी होश में आने की कोई

महोदय ! एषः (शिक्षकः) चेतनां कियति काले प्राप्स्यति ? चिकित्सकः - एतदेव होरा त्रिचतुः मात्रं कालस्तु चेतनां प्राप्तुं लगिष्यति एव । एक छात्रः - चिकित्सक महोदय ! ज्ञापयतु तावत् एतस्मात् पूर्वं तु एपः चेतना न प्राप्स्यति ? चिकित्सकः—नैव, एतस्मात् पूर्वम् एपः चेतनां सर्वथा न प्राप्स्यति । छात्रः - पुनस्तु समीचीन मेव । चिकित्सकः - किं प्रयोजनम्, पुनस्तु समीचीनम् इति कथमुक्तम् ? छात्रः - महोदय ! कापि विशेषा वार्ता नास्ति । अस्माभिः चिन्तितं यत् एतावत् समय पर्यन्तं वयमेकं चलच्चित्रमेव दृष्ट्वा आगच्छेम ।

(23) एकः जनः द्वितीयम् कथयति - किं कदापि त्वया गर्दभाः दृष्टाः श्रुताः वा ? द्वितीयः - आम् आम् कथन्न, बहवः दृष्टाः । प्रथमः - नैव, नितान्तं नैव । यदि दृष्टाः तदा एतादृशानि कार्याणि कथं करोषि ? द्वितीयः - कथम्, एतादृशं किम् कार्यं कृतं मया ? प्रथमः - यथा अधुनैव त्वया पृष्ठतः मयि पाद-प्रहारः कृतः । द्वितीयः - अस्तु, एषा वार्ता । एषः प्रहारस्तु अज्ञाने एव अभवत् । प्रथमः - नैव, त्वया ज्ञात्वैव पाद-प्रहारः कृतः, त्वं गर्दभः असि । द्वितीयः - नैव, एवं तु न आसीत् । परं यदि ज्ञात्वैव पादः दत्तः, तर्हि एतदेव ज्ञात्वा प्रहारः कृतः यत् गर्दभोऽपितु अपरं गर्दभं पादेन प्रहरति । प्रथमः - किं त्वम् मामेव गर्दभं जानासि ? द्वितीयः - आम्, मया गर्दभम् एव गर्दभः ज्ञातः । प्रथमः - किमुक्तम्, त्वं मामपि गर्दभं जानासि । द्वितीयः - ज्ञातं किम्, तथ्यमेव तु ज्ञातम्, प्रथमः - यदि तथ्यं ज्ञातं तदा सम्यक् । अहमपि स्वीकरोमि, यतोहि गर्दभाः अन्यान् सर्वानपि गर्दभानेव पश्यन्ति ।

(24) प्रथमं मित्रं द्वितीयं मित्रं कथयति - मित्र ! ह्यो मया एकः अति विचित्रः स्वप्नः दृष्टः । द्वितीयम् - भ्रातः मनाक् मामपि श्रावय, सः विचित्रः स्वप्नः किमासीत् ? प्रथमम् - स्वप्नः एषः आसीत् यत् त्वम् एकस्मिन् मलिने [illegible] अपतः । द्वितीयम् -

सम्भावना नहीं है छात्र - इन्हें (मास्टर जी को) होश में आने में कितना समय लगेगा डाक्टर साहब ! डाक्टर - यही लगभग कोई 3-4 घण्टे का समय तो ठीक होने में लग ही जायगा। एक छात्र—डाक्टर साहब ! यह बताइये कि इससे पहले तो उन्हें (मास्टर जी को) होश नहीं आयगा न ? डाक्टर - नहीं, इससे पहले इन्हें बिलकुल होश नहीं आने का है। छात्र - फिर तो ठीक है। डाक्टर - क्या मतलब ? फिर ठीक है क्यों कहा ? छात्र - जी कोई विशेष बात नहीं है। हमने सोचा कि इतने समय तक हम एक पिक्चर ही देख आएँ।

(23) एक पहला आदमी दूसरे से कहता है - क्या तुमने कभी गधे देखे हैं। या सुने हैं ? दूसरा - हाँ हाँ क्यों नहीं, बहुत से देखे हैं। पहला - नहीं, बिलकुल नहीं। यदि देखे होते तो ऐसे काम ही क्यों करते ? दूसरा - क्यों ऐसा क्या किया मैंने ? पहला - जैसा कि अभी पीछे से तुमने मुझे लात मारी। दूसरा - अच्छा, ये बात है। यह तो ऐसे ही अनजाने में ही लग गई। पहला - नहीं तुमने जानकर ही लात मारी है, तुम गधे हो। दूसरा - नहीं, ऐसा तो नहीं था। पर यदि जानकर भी लात मारी तो यहीं जानकर मारी कि गधा भी तो दूसरे गधे को लात मार देता है। पहला - क्या ? तुमने मुझे ही गधा समझा ? दूसरा - हाँ, मैंने गधे को ही गधा जाना है। पहला - क्या कहा, तुमने मुझे भी गधा जाना ? दूसरा - जाना क्या ? ठीक ही तो जाना। पहला - ठीक जाना, तो ठीक है। मैं भी मान लेता हूँ क्योंकि गधों को सब गधे ही नजर आते हैं।

(24) एक मित्र दूसरे मित्र को कहता है - यार कल मैंने एक बड़ा विचित्र सपना देखा। दूसरा - भई जरा हमें भी सुनाओ, वह विचित्र सपना क्या था ? पहला - सपना यह था कि तुम एक गन्दे नाले में पड़े थे। दूसरा - तब ? पहला - तुम्हारा सारा शरीर गन्दी काली बदबूदार कीचड़

तदा ? प्रथमम् - तवाशेषं शरीरं मलिन-कृष्ण-दुर्गन्ध-मयेन पङ्केन अभितः लिप्तम् आसीत् । द्वितीयम् - ततस्ततः ? प्रथमम् - अग्रे किं कथयामि ? द्वितीयम् - अग्रे किम् अभवद् इत्यहं कथयामि। प्रथमम् - तत् किमासीत् ? द्वितीयम् - त्वम् मधुनि अपतः, तव पूर्णं तनू मधुना लिप्तम् आसीत् । प्रथमम् - अरे वाह । पुनः किमभवत् द्वितीयम् - तस्याम् एव स्थितौ आवाम् मिथः समीपम् छआगच्व तथा अन्योन्यं दृष्टवा किञ्चिद् अविचारयाव एव तदैव । प्रथमम् - तदैव किमभवत् ? द्वितीयम् - तदैव त्वम् माम् अलेलिहः अहञ्च त्वाम् अलेलिहम् ।

(25) एकस्मिन् उद्याने प्रविशन्तम् एकं महोदयम् अवलोक्य तत्रत्यः उद्यानपालः तम् अवदत् - महोदय ! उद्याने कुक्कुराणां प्रवेशः वर्जितः । महोदयः....अरे दास्याः पुत्र ! किं वडवडायसे ? किम् त्वया अहम् कुक्कुरः...उद्यानपालः (मध्ये एव) अवदत्...न महोदय ! अहन्तु भवत्पृष्ठे आयान्तम् एवम् श्वानम् अधिकृत्य भणामि । महोदयः....कं कथयसि ? मालाकारः....भवन्तम्, यद् भवान् उद्याने स्वेन सह श्वानं न नयतु इति । महोदयः... एषः श्वानः मदीयः नास्ति । उद्यानपालः....तदैवः भवत्पृष्ठे एव कथम् आयातीति ? महोदयः ...महीयपृष्ठे तु त्वम्पि आगच्छसि । किम् अहम् सर्वेषां पृष्ठानुगतानां स्वामी अभवम् ? उद्यानपालः - न तहोदय ! मम प्रयोजनम् इदं यदस्य कुक्कुरस्य स्वामी को ऽस्ति ? महोदयः -- कुक्कुरस्य स्वामिनी एषा अस्ति या मया सह चलति ।

(26) एका शिशु बालिका स्व पितरम् अपृच्छत् - पितः ! वदतु भवान् कुत्र अजायत ? पिता - वत्से, का वार्ताऽस्ति त्वमेवं कथं पृच्छसि ? बालिका - भवान् वदतु अहं ज्ञातुम् इच्छामि । पिता - वत्से अहन्तु दिल्लीनगरे उत्पन्नोऽभवम् बालिका - अधुन वदतु अम्बा कुत्र अजायत ? पिता - अरे एतत् किम्, अनेन ते किं कार्यम् ? त्वमस्माकम् जन्म पत्रम् करोषि किम् ? बालिका - पितः

से बुरी तरह सब ओर से सना हुआ था। दूसरा - फिर ! पहला - फिर क्या बताऊँ ? दूसरा - फिर आगे की बात मैं बताता हूँ। पहला - वह क्या ? दूसरा - तुम शहद में गिर गए थे, और तुम्हारा सारा शरीर शहद में लथपथ था - पहला - अरे वाह ! फिर क्या हुआ ? दूसरा - उसी अवस्था में हम दोनों एक दूसरे के पास आए। तथा एक दूसरे को देख कर कुछ आगे की बात सोच ही रहे थे कि तभी - । पहला - तभी क्या हुआ ? दूसरा - तभी तुम मुझे चाटने लगे और मैं तुम्हें चाटने लगा।

(25) एक पार्क में प्रवेश करते हुए एक साहब को देखकर वहाँ के माली ने टोककर कहा - साहब ! बाग में कुत्तों का जाना मना है। साहब - अबे क्या बकता है ? क्या तुझे हम कुत्ते - । माली (बीच में ही) बोला - नहीं साहब ! मैं तो आपके पीछे आ रहे इस कुत्ते के लिये कह रहा हूँ। साहब किससे कह रहे हो ? माली - आप से, कि आप बाग में अपने साथ कुत्ते को न ले जायें। साहब - यह कुत्ता मेरा नहीं है। माली - तो यह आपके पीछे-पीछे ही क्यों आ रहा है ? साहब - मेरे पीछे तो तुम भी आ रहे हो। क्या मेरे पीछे आने वाले सभी का मैं मालिक हो गया ? माली - नहीं साहब ! मेरा मतलब, कि फिर कुत्ते का मालिक कौन है ? साहब - कुत्ते का मालिक ये हैं जो मेरे साथ चल रही हैं।

(26) एक बच्ची ने अपने पापा से पूछा - पापा बताओ आप कहां पैदा हुए थे ? पापा - बेटी ! क्या बात है तुम ऐसा क्यों पूछ रहीं हो ? बच्ची - आप बताओ, मैं जानना चाहती हूँ। पापा - बेटी मैं तो दिल्ली में पैदा हुआ था। बच्ची - अब बताओ, मम्मी कहां पैदा हुई थी ? पापा - अरे यह क्या ? इससे तुम्हें क्या करना है। तुम हमारी जन्मपत्री बना रही हो क्या ? बच्ची - पापा ! जन्मपत्री की कोई बात नहीं, बस मैं जानना

जन्मपत्रस्य कापि वार्ता नास्ति, केवलं ज्ञातुम् इच्छामि। पिता - तव अम्बा आगरा नगरे उत्पन्ना अभवत्। वालिका - पितः रे पितः ! तत्र कथम् उत्पन्ना अभवत् ?किम् तस्याः मस्तिष्कः विकृतः आसीत् ? पिता - न वत्से, एषा तु संयोगस्य वार्ताऽस्ति। वालिका - भ्राता कुत्र अजायत ? पिता - सः तु देहरादून नगरे अजायत। वालिका - अस्तु अहम् कुत्र उत्पन्ना अभवम् ? पिता - वत्से त्वम् तु झाँसी नगरे उत्पन्ना अभवः। वालिका- अस्तु एषा वार्ता ? वयम् सकलाः दूरे दूरे उत्पन्नाः अभवाम, तदा अत्र कलिकाता नगरे वयम् कथम् एकत्रिताः अभवाम ?

(27) एकदा एकः वालः अति सम्मर्दे करुणं क्रन्दन् उच्चैः वदति स्म मातरः भगिन्यः सज्जनाश्च अस्मिन्काले अहम् अनाथः सञ्जातः। मे पितरौ मत् विरहितौ स्तः। अहम् ताभ्याम् मिलने असमर्थोऽस्मि। भवन्तः मयि दयां कुर्वन्तु। केवलं 3.50 पणकानां प्रश्नः अस्ति। यदि एतानि मह्यं प्राप्येयुः तदाऽहं स्व मात्रा पित्रा पुनः मिलितुं शक्नोमि, अन्यथा कः जानाति अहं ताभ्याम् कदापर्यन्तं विरहितो भवानि ? सम्मर्दे जनाः परस्परम् आलपितवन्तः - वराकस्य सहायतां कुरुत। केन चतुराणकाः केन अष्टाणकाः केन च रूप्यकं दत्त्वा पर्याप्ता सहायता कृता। वालः मध्ये एवावदत् - अलं भ्रातरः अलम्। एतैः आगतैः पणकैः अहं पातुं खादितुमपि शक्नोमि अथ च पित्रोः समीपेऽपि गन्तुं शक्नोमि। सम्मर्दे कोऽपि-अनेन पणकानां पूर्तौ एव सपदि वारितः लोभी नास्ति। वराकाय वास्तविकरूपेण आवश्यकता आसीत्। कोऽपि अन्यः वालकम् अपृच्छत् - वत्स, त्वं स्व मातुः पितुः समीपे कुत्र कथञ्च प्राप्स्यसि? बालकः - एतैः पणकैः प्रवेशपत्रं क्रीत्वा चलचित्रं गमिष्यामि तत्रौविष्टौ तौ मिलिष्यतः।

चाहती हूँ । पापा - तुम्हारी मम्मी आगरा में पैदा हुई थी । बच्ची - बाप रे बाप ? वहाँ क्यों पैदा हुई, क्या उनका दिमाग खराब था ? पाप - नहीं बेटे ! यह तो संयोग की बात है । बच्ची - भाई कहाँ पैदा हुआ था ? पापा - वह देहरादून में पैदा हुआ । बच्ची - अच्छा, मैं कहाँ पैदा हुई थी । पापा - बेटी तुम तो झाँसी में पैदा हुई थी ? बच्ची - अच्छा ये बात है । हम सब पैदा दूर-दूर हुए तो फिर यहाँ कलकत्ते में एक साथ कैसे मिल गए ।

(27) एक बार एक बच्चा मारी भीड़ में चिल्ला-चिल्लाकर करुण स्वर में कह रहा था - माताओ, बहनो, और सज्जनो ! इस समय पर मैं अनाथ हो चुका हूँ । मेरे मां बाप मुझसे बिछुड़ गए हैं । मैं उनसे मिलने में असमर्थ हूँ । आप लोग मेरे पर दया करें । केवल 3.50 पैसे का सवाल है । यदि ये मिल जायें तो मैं अपने मां बाप से पुनः मिल सकता हूँ । नहीं तो कौन जाने मुझे उनसे कितनी देर बिछुड़ा रहना पड़े । भीड़ में लोग आपस में कहने लगे - बेचारे की मदद करो । किसी ने चवन्नी, किसी ने अठन्नी और किसी ने रुपया देकर खूब सहायता की । बच्चा बीच में ही बोला - बस भाइयो बस । मेरे पास इतने पैसे आ चुके हैं कि मैं इनसे कुछ खा पी सकता हूँ और अपने मां बाप के पास भी पहुँच सकता हूँ । भीड़ में से कोई एक - इसने पैसे पूरे होते ही तुरन्त मनाकर दिया, लालची नहीं है । बेचारे को वास्तव में जरूरत थी । किसी दूसरे ने बच्चे से पूछा...बेटे !अपने मां बाप के पास कहाँ और कैसे जायगा ?बालक - जी, इन पैसों से टिकट खरीदकर जाऊँगा । वे मुझे सिनेमा हाल में बैठे मिलेंगे ।

(28) एकं वायुयानं यात्रिणः नीत्वा उत्पतितुम् एव आसीत्। एकः यात्री परिचालकम् अपृच्छत्—परिचालक महोदय ! भवता वायुयानमेतत् सभ्यक्तया निरीक्षितं किं वा ? परिचालकः—आम् महोदय, सम्यक प्रकारेण परीक्षितम्। अधुना अस्मिन् कापि अव्यवस्था नास्ति, भवान् निश्चिन्तो भवतु। परम् भवान् एवं प्रकारेण कथं पृच्छति ? किं भवन्तं कापि अव्यवस्था दरिदृश्यते ? साम्प्रतं तु नैव, परं पश्चात् अव्यवस्था भवति। परिचालकः—भवत् कोऽभिप्रायः ? यात्री—महोदय ! आरम्भे तु यात्रिणः अति प्रेमणा उपवेशयन्ति, पश्चात् चालकजनाः यात्रिणः भृशं तुदन्तीति, परिचालकः....किं भवता सह कदापि कापि एतादृशा घटना जाता? यात्री—आम्, जाता तदैव तु अहं कथयामि। गत दिवसस्य एव वार्ता ऽस्ति। वयम् एकस्मिन् वसयाने उपाविशाम। मार्गे यानस्य चालकः यात्रिणः अवदत्—भ्रातरः ! यानम् बलेन वहत अन्यथा वसयानं न चलिष्यति। विवशैः मार्गे त्रिन्चतुर्वारं वलेन वहनं कृतम्। अहम् अधुनाऽपि एतदेव चिन्तयामि स्म यत् भवानपि कदाचित् मार्गमध्ये एव यानम् बलेन बोढुम् न आदिशतु।

(29) एकस्य कृपणस्य समीपे कानिचिद् अन्यानि मित्राणि मिलितुम् आगच्छन्। बहुकाल पर्यन्तं वार्तालापः अभवत् परं कृपणः तेभ्यः चायमात्रम् अपि न प्रदत्तम्। अस्तु, सर्वे जानन्ति स्म यदेषः सर्वोपरि कृपणः अस्ति। अतः अनेन किमपि खादनस्य पानस्य आशाकरणम् व्यर्थमेव अस्ति। एकः सहचरः अवदत्—अस्तु अधुना वयम् चलाम किम् ? कृपणः—भवतः प्रियां वार्ता श्रुत्वा मह्यम् अतीव प्रसन्नता जाता। एकोऽन्यः भवत्प्रसन्नतायाः किम् कारणम् ? कृपणः—एतदेव यद् भवन्तः यथा वाञ्छन्ति, तस्मादहम् अतीव प्रसन्नोऽस्मि। द्वितीयः—अस्मान् स्पष्टं वद यद् वयम् गच्छेम न वा ? कृपणः—गन्तुं स्वयमेव भवन्तः कथयन्ति अहम् युष्मान् गमनात् वारयितु कथं समर्थः ? तृतीयः—एतद् वयम् कथं जानीम यदस्माभिः अधुना गन्तव्यम् ? कृपणः—यदाऽहं स्व

(28) एक जहाज यात्रियों को लेकर उड़ने वाला था। एक यात्री ने पायलट से पूछा – पायलट साहब ! आपने इस जहाज को अच्छी तरह चैक तो कर लिया है ना ? पायलट—हाँ जनाब ! खूब अच्छी तरह चैक कर लिया है। अब इसमें कोई गड़बड़ी नहीं है। आप निश्चिन्त रहें। लेकिन आप ऐसा क्यों पूछ रहे हैं ? क्या कोई आपको गड़बड़ दिखाई देती है। यात्री—अभी तो नहीं, पर बाद में गड़बड़ हो जाती है। पायलट—आपका क्या मतलब ? यात्री—जी, शुरू में तो यात्रियों को खूब प्रेम से बिठा लेते हैं। बाद में ड्राइवर लोग यात्रियों को बहुत परेशान करते हैं। पायलट—क्या आपके साथ कभी कोई ऐसा हादसा हुआ ? यात्री—हाँ हुआ तभी तो मैं कह रहा हूँ। कलकी ही बात है हम एक बस में बैठ गए। रास्ते में बस का ड्राइवर यात्रियों से बोला—भाइयो धक्के लगाओ, नहीं तो बस नहीं चलेगी। हारकर रास्ते में तीन, चार बार धक्के लगाने पड़े। मैं अब भी यही सोच रहा था कि कहीं आप भी बीच रास्ते में धक्के लगाने को न कह दें।

(29) एक कंजूस के पास कुछ दूसरे मित्र मिलने को आए। बहुत देर तक आपस में बातचीत होती रही। परन्तु उसने उन्हें चाय तक के लिये नहीं पूछा। खैर, सब जानते थे कि यह एक नम्बर कंजूस है, अतः इससे कुछ खाने पीने को आशा करना व्यर्थ है। एक साथी ने कहा—अच्छा भई अब हम चलें क्या ? कंजूस—आपकी प्यारी बात सुनकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। एक—आपकी प्रसन्नता का क्या कारण है ? कंजूस—यही कि आप जैसी इच्छा कर रहे हैं उससे मुझे बेहद प्रसन्नता है। दूसरा साथी —हमें साफ-साफ कहो हम जायें कि नहीं। कंजूस—जाने को तो आप स्वयं ही कह रहे हैं, भला मैं आप लोगों को कैसे रोक सकता हूँ ? तीसरा साथी—हम इसे कब समझें कि अब हमें चला जाना चाहिये ? कंजूस—जब मैं अपने नौकर को बुलाकर यह कहूँ कि राम लाओ अब

भृत्यम् आकार्य एतत् वदानि यत् "रामू अधुना मम स्थालीम् आनय" तदैव युष्माकं गमनवेलायाः शुभ मुहूर्तम् अस्ति । .

(30) अध्यापिका स्वां छात्रां अवदत्—भो छात्रे ! यदि त्वम् पाठम्न स्मरिष्यसि तर्हि सम्यक् न भविष्यति । छात्रा—कोऽभिप्रायः भवत्याः ? किम् सम्यक् न भविष्यति ? अध्यापिकाः—तवोपरि कठोरा कार्यवाही भविष्यतीति । छात्रा—अधुना अपि मया सम्यक् न ज्ञातम् । अध्यापिका—ज्ञास्यसि, त्वम् तु बहुवारम् ज्ञास्यसि, यदोपरि कष्टम् आपतिष्यति । छात्रा—हा कष्टम् ममोपरि कष्टम् आपतिष्यति । अध्यापिका—अथ किम् ? छात्रा—आपतेत् ! अहम् तु कस्यचिदपि आपतनेन न बिभेमि । अध्यापिका—वार्तालापम् अधिकं करोषि कार्यम् न करोषि । एवम् प्रकारेण त्वम् प्रताडनम् भोक्ष्यसि ।छात्रा—कस्मिन् पात्रे भोक्ष्यामि, अत्र तु स्थाली अपि नास्ति ।

(31) एका माता एके हस्ते नाणकं (नोट) द्वितीये च दश पणकमुद्रां गृहीत्वा स्व बालकं पृच्छति—बाल ! कथय, दशपणकं गृहीष्यसि एतत् कर्गजं वा ?

बालोऽवदत्—अहं तु पणकमेव गृहीष्यामि कर्गजेन मे किं प्रयोजनम् । परं मम हस्ते पणकं कोऽपि नान्यः पश्येत् । अतः अस्मिन्नेव कर्गजे परिवेष्ट्य सम्पुट्य वा पणकं दीयताम् शीघ्रम् ।

(32) एकः निर्देशकः अभिनेतारम् अवदत्—भ्रातः मनाक् अभिनये वास्तविकताम् आनय । मह्यम् अवास्तविकं वस्तु न रोचते । अभिनेता—अधुना किं वास्तविकम् इष्यते ? निर्देशकः—यथा अधुना तु शोककरणस्य वास्तविकताम् आनय ? अभिनेता—नय, अहं वास्तविक [illegible] शोकं करोमि । निर्देशकः—वास्तविक

मेरी थाली परोस दो। बस तभी आप लोगों को जाने के लिये शुभ मुहूर्त होगा।

(30) एक अध्यापिका अपनी छात्रा से बोली—अरी छात्रा ! यदि तू पाठ को याद नहीं करेगी तो ठीक नहीं होगा। छात्रा—आपका क्या मतलब ? क्या ठीक नहीं होगा ? अध्यापिका—तुम पर कठोर कार्यवाही की जायगी। छात्रा—अब भी मैंने ठीक से नहीं समझा। अध्यापिका—समझेगी, तू तो बहुतबार समझेगी, जब ऊपर से कष्ट आ पड़ेगा। छात्रा—हा कष्ट, मेरे ऊपर कष्ट आकर पड़ेगा। अध्यापिका—और क्या ? छात्रा—आपड़े, मैं किसी के आपड़ने से नहीं डरती हूँ। अध्यापिका—बातें बहुत बनाती है, काम नहीं करती है। इस प्रकार तू, मार खाएगी। छात्रा—किस बर्तन में खाऊँगी ? यहाँ तो कोई थाली भी नहीं है।

(31) एक माँ अपने एक हाथ में नोट और दूसरे हाथ में 10 पैसे का सिक्का लेकर अपने बालक से पूछती है—बेटे ! बताओ, दस पैसे लोगे अथवा ये कागज लोगे ?

बालक बोला—मैं तो पैसे ही लूंगा, कागज से मेरा क्या मतलब ? परन्तु मेरे हाथ में कोई पैसों को देख न ले। इसलिए इसी कागज में लपेट कर मुझे जल्दी पैसे दे दो।

(32) एक निर्देशक अभिनेता से बोला—भाई जरा अभिनय में वास्तविकता (असलियत) लाओ, मुझे नकली चीज पसन्द नहीं होती। अभिनेता—इस समय क्या असलियत चाहिये ? निर्देशक—जैसे कि अभी तो शोक करने की वास्तविकता लाओ। अभिनेता—लो मैं वास्तव में शोक कर रहा हूँ। निर्देशक—वास्तव में किस बात पर शोक कर रहे हो ?

शोकं केन कारणेन करोषि ? अभिनेता—एतदेव यत् अग्रे गत्वा तवेदं चलचित्रं प्रताडितं भवेदिति। निर्देशकः—नैव, भगवते एवं न कथय। शुद्धं शुद्धं सत्यरूपेण अभिनयं कुरु। येन जनतायाम् अस्माकं चलचित्रं पर्याप्तं प्रचलितं स्यात्। अभिनेता—अस्तु, वद अधुना किं करणीयम् ? निर्देशकः—अधुना मनाग् अश्रूणि आनय। अभिनेता (नेत्रयोः जलं विषिञ्च्य) नय, आनीतानि अश्रूणि। निर्देशकः—मया पूर्वमेव उक्तं यत् अवास्तविकं वस्तु मह्यं न रोचते। मनाक् वास्तविकानि अश्रूणि आनय। अभिनेता—अग्रिमे दृश्ये विषपानस्य अभिनयः अस्ति। तत् किं तत्र विषमपि वास्तविकं पातव्यमस्ति ?

(33) माता स्वं पुत्रम् अपृच्छत्—पप्पू त्वम् अपरस्मिन् जन्मनि किं भवितुम् इच्छसि ? मनुष्यः पशुर्वा ? पप्पू—महोदया, अहम् पशुः भवितुम् इच्छामि। माता—अरे, एवं कथम् ? पप्पू—ईदृशम् अतएव यत् पशवः पठन्ति नैव। माता—अस्तु, एषा वार्ता त्वम् पठनात् धावितुमेव पशुः भवितुम् इच्छसि। पप्पू—महोदया, ते प्रत्यहम् स्व पुस्तक भारमपि नोत्थापयन्ति। माता—अस्तु, पशुषु कतमः पशुः भवितुम् इच्छसि ? पप्पू—महोदया, लम्बग्रीवो भवितुम् इच्छामि। माता (आश्चर्यचकिता सती) मामपि ज्ञापय यत् लम्बीग्रीव एव कथम् भवितुम् इच्छसि ? पप्पू—तस्य ग्रीवा दीर्घा भवति, अतएव। माता—लम्बग्रीवया किं भवति ? पप्पू—लम्बग्रीवया अनेके लाभाः सन्ति। माता—मनाक् श्रावयतु लम्बग्रीवया के के लाभाः सन्ति। पप्पू—बहवः लाभाः सन्ति, अहं किं किम् वदानि ? माता—चलतु, एकमेव लाभं ज्ञापय यत् त्वम् लम्बग्रीवया किं करिष्यसि ? पप्पू—प्रतिवेशी-उद्यानात् अन्तःप्रवेशं विनैव फलानि खादिष्यामि।

अभिनेता—यही कि आगे चलकर तुम्हारी इस फिल्म के पिट जाने पर। निर्देशक—ना, ना, भगवान के लिए ऐसा न कहो और ठीक-ठीक सच्चे रूप में अभिनय करो, जिससे जनता में हमारी फिल्म खूब चले। अभिनेता—अच्छा, बोलिये अब क्या करें। निर्देशक—अब जरा आंसू लाइये। अभिनेता (आखों में पानी लगाकर)—लो, ले आया आँसू। निर्देशक—जरा सचमुच के आँसू लाइये। मैंने पहले ही कहा था कि मुझे नकली चीज पसन्द नहीं है। अभिनेता—अगले दृश्य में जहर पीने का अभिनय है। तो क्या वहाँ जहर भी असली पीना पड़ेग ?

(33) माता ने अपने बेटे से पूछा—पप्पू तुम अगले जन्म में क्या बनना चाहते हो। मनुष्य या पशु ? पप्पू—जी, पशु बनना चाहता हूँ। माता—अरे, ऐसा क्यों ? पप्पू—ऐसा इसलिए कि पशुओं को पढ़ना नहीं पड़ता। माता—अच्छा ये बात है तुम पढ़ने से बचने के लिये पशु बनना चाहते हो। पप्पू—जी। उन्हें रोजाना अपना बस्ता भी नहीं उठाना पड़ता है। माता—अच्छा, पशुओं में कौन सा पशु बनना चाहते हो ? पप्पू—जी, जिराफ बनना चाहता हूँ। माता (आश्चर्य करती हुई)—भला हमें भी बताओ कि जिराफ क्यों बनना पसन्द करते हो ? पप्पू—जिराफ की लम्बी गर्दन होती है इसलिये। माता—लम्बी गर्दन से क्या होता है ? पप्पू—लम्बी गर्दन से बहुत से लाभ हैं। माता—जरा सुनें तो लम्बी गर्दन के क्या-क्या लाभ हैं। पप्पू—बहुत से लाभ हैं, मैं क्या-क्या बताऊँ ? माता—चलो एक ही लाभ बता दो, तुम लम्बी गर्दन से क्या करोगे ? पप्पू—पडौस के बाग में से बिना अन्दर घुसे फल खाया करूँगा।

(34) एकदा एक: नृपः कस्यचित् कवेः कवितायाः प्रसन्नो भूत्वा कविम् उवाच—कथयतु किं पारितोषिकं ग्रहीष्यति ? अहम् भवति अतीव प्रसन्नोऽस्मि। कविः—भवन्महती कृपा वर्तते। किमपि ईदृशं पारितोषिकं प्रयच्छतु यत् सामान्य पारितोषिकं न स्यात् अपरञ्च तत्पारितोषिकस्य फलमपि मह्यं शीघ्रमेव मिलेत्। नृपः—सम्यक्, इत्युक्त्वा तस्मै अत्यन्तं कृशकायं दुर्बलम् घोटकम् अयच्छत्।

अवशः कविः तम् अश्वम् अनयत्। सः अश्वः कविगृहं प्राप्य तस्यामेव रात्रौ पञ्चत्वं गतः। अपरस्मिन्नहनि यदा कविः राजद्वारे प्राप्तः राजा तम् अपृच्छत्-कथय घोटकः कीदृशः आसीत् ? कविः—महाराज ! भवत्पारितोपिकस्य किं कथनं तस्य फलमपि च सपदि एव प्राप्तः। राजा—स्पष्टं कथयतु किमभवत् ? कविः—महाराज ! भवता प्रसादीकृतस्य अश्वस्य गते विपये किं वर्णयानि ? सोऽश्वस्तु एकस्यामेव रात्रौ एतस्मात् लोकात् परलोकं प्राप्तः।

(35) भाटकदातुः एवं गृहस्वामिनः मध्ये भाटकं न प्रदानेन कलहोऽजायत। स्वामी—अहं वहु दिनानि आरभ्य गृहभाटकं याचे, परं त्वम् दानस्य नामापि न गृह्णासि। यदा त्वम् प्रतिमासस्य विंशतिरूप्यकाणि अपि दातुं न शक्नोषि, तदा अधुना तु त्वयि कानिचित् शतकरूप्यकाणि जातानि तानि त्वम् कथं दास्यसि ? भाटकदाता—सम्यक्, अहं परश्वः भवते भाटकं दास्यामि। गृहस्वामी—अवश्यं दातव्यम्। भाटकदाता—आम्, अवश्यं दास्यामि।

तृतीये दिवसे गृहस्वामिना पुनः तस्मात् भाटकं याचितः। भाटकदाता विंशति रूप्यकाणि यच्छन् अवदत् एतानि गृहाण, शेषानि रूप्यकाणि अन्यं किमपि वस्तु विक्रीय दास्यामि। गृह-स्वामी—बहु मासानां भाटकम् अवशिष्टम् अस्ति, त्वं केवल

(34) एकवार एक राजा ने किसी कवि को उसकी कविता पर प्रसन्न होकर कहा—वताइये क्या इनाम लेंगे ? हम तुम पर वहुत प्रसन्न है। कवि—आपकी वड़ी कृपा है। कोई ऐसा इनाम दीजिए जो सामान्य इनाम न हो और उस इनाम का फल भी मुझे जल्दी ही मिल जाए। राजा—ठीक है। राजा ने उसे एक अत्यन्त दुर्वल मरियल सा घोड़ा दे दिया।

कवि को वह घोड़ा ले जाना पड़ा। घोड़ा कवि के घर जाकर उसी रात मर गया। दूसरे दिन कवि दरवार में पहुँचा तो राजा ने पूछा—कहो घोड़ा कैसा रहा ? कवि—महाराज ! आपके इनाम के क्या कहने और उसका फल भी तुरन्त ही मिल गया। राजा—साफ-साफ कहो, क्या हुआ ? कवि—महाराजा आपके द्वारा इनाम में दिये घोडे की रफतार का क्या वर्णन करूँ। वह घोड़ा तो एक ही रात में इस दुनिया से दूसरी दुनिया में पहुँच गया।

(35) एक मकान मालिक और किरायेदार में किराया न देने के कारण झगड़ा हो गया। मालिक—मैं वहुत दिन से मकान का किराया माँग रहा हूँ कि तुम देने का नाम ही नहीं लेते। जव तुम प्रतिमास का किराया 20/- रु० भी नहीं दे सके तो अव तुम पर कई सौ रुपये किराया हो गया है उसे कैसे दोगे ! किरायेदार—ठीक है, मैं परसों आपको किराया दे दूंगा। मकान मालिक—जरूर दे देना। किरायेदार—हां अवश्य दे दूंगा।

तीसरे दिन फिर मकान मालिक ने उससे किराया मांगा, किरायेदार ने 20/-रु० देते हुए कहा—ये लो, वाकी रुपये कोई अन्य चीज बेचकर दे दूंगा। मकान मालिक—इतने महीने का किराया वाकी है और तुम केवल 20 रुपये ही दे रहे हो। किरायेदार—यदि आपके मकान के पिछले

विंशतिरूप्यकाणि एव यच्छसि । भाटकदाता—यदि भवद् गृहस्य पृष्ठद्वारस्य कपाटम् उत्पाट्य विक्रयः न कृतः स्यात्, तर्हि एतानि रूप्यकाणि दातुम् अपि असमर्थं आसम् । अतः एतानि रक्षतु अवशिष्टानि अपि एवमेव मिलिष्यन्ति ।

(36) एकस्मिन् भोजनालये भोजनम् अदनकाले विद्युत विलुप्ता । तदा एकः ग्राहकः वेतरम् अवदत्—विद्युद् गमनेन अन्धकारः जातः गच्छ एकाम् मोम वर्तिकाम् प्रज्वाल्य आनय । वेतरः—महोदय अस्मिन् भोजनालये अस्माकं स्वामी ग्राहकेभ्यः भोजन विद्युदादिकस्य व्ययं गृह्णाति परं मोम वर्तिकायाः भवद्भ्यः किमपि न गृह्यते । अतः—(मध्ये एव) ग्राहकः—वार्ता न रचय, शीघ्रं गच्छ, मोम वर्तिकाम् गृहीत्वा आनय । ताम् विना अहम् भोक्तुम् समर्थः नास्मि । वेतरः—महोदय, भोजनन्तु भवान् हस्तेन खादति अथवा मोमवर्तिकया ? ग्राहकः—हस्तेन, परम् अधुना मोम वर्तिकाम् विना किम् खादानि ? वेतरः—तर्हि किं मोमवर्तिकाम् खादिष्यति, भोजनं खादतु । ग्राहकः—अरे मूढ ! प्रकाशं विना कथम् खादितुम् पारयामि ? वेतरः—एवम् (सः सपदि शकलमेकं तस्य स्थाल्याः उत्थापितं स्वमुखे च रक्षितम् । ग्राहकः—यूयम् तु पश्यन्तः एव अभ्यसिताः जाताः, परम् अस्मिन् अन्धकारे मम मुखम् कः अन्वेष्यति ?

(37) द्वौ सखायौ उपविश्य परस्परं वार्तालापं कुरुतः स्मः । एकः—भ्रातः मोहन । सम्प्रति तु भवान् अति महान् जनः अस्ति लक्षेषु च क्रीडति । एतस्य किं कारणमस्ति ? द्वितीयः—मित्र ! एतस्य कारणम् तु अहमपि न जानानि । आम् केवलं भगवतः कृपा एव कारणं विद्धि । प्रथमः—भगवतः कृपां न, पत्न्याः कृपां कथयतु । द्वितीयः—पत्न्याः कृपा इति कथम् ? प्रथमः—पत्न्याःकृपा एवं प्रकारेण यत् अद्य गृहे पत्न्यागमनः—कारणेन एव भवान् लक्षपतिः

दरवाजे को उखाड़ कर न वेचा होता तो ये 20/- रु० भी नहीं दे पाता। अतः इन्हें रखलो, वाकी भी इसी प्रकार मिल जायेंगे।

(36) एक होटल में खाना खाते खाते विजली चली गई। तव एक ग्राहक ने वेटर से कहा—विजली जाने से अंधेरा हो गया है जाओ एक मोमवती जलाकर ले आओ। वेटर—साहव इस होटल में हमारे मालिक ग्राहकों से विजली आदि सभी का खर्चा लेते हैं परन्तु मोमवत्ती का आपसे कुछ नहीं लिया जाता। अतः···(वीच में ही) ग्राहक—वातें नहीं वनाओ जल्दी जाओ, मोमवत्ती लेकर आओ, उसके विना मुझसे खाना नहीं खाया जाता। वेटर—साहव ! खाना तो आप हाथ से खाते हैं या मोमवत्ती से ? ग्राहक—हाथ से, लेकिन अव मोमवत्ती विना खायें क्या ? वेटर तो क्या मोमवत्ती खायेंगे, खाना खाइये। ग्राहक—अरे वेवकूफ ! उजाले के विना कैसे खाया जायेगा ? वेटर—ऐसे, (उसने तुरन्त उनकी थाली से एक टुकड़ा उठाया और अपने मुंह में रख लिया) ग्राहक—तुम लोगों को तो देखते-देखते अभ्यास हो गया है। लेकिन इस अंधेरे में मेरा मुंह कौन ढूंढेगा ?

(37) दो मित्र आपस में वैठे वातें कर रहे थे। एक ने कहा—भाई मोहन इस ममय तो तुम वड़े आदमी हो और लाखों में खेलते हो। इसका क्या कारण है ? दूसरा—मित्र ! इसका कारण तो मुझे भी नहीं मालूम है। हाँ वस भगवान की कृपा ही समझो। पहला – भगवान की कृपा नहीं पत्नी की कृपा कहो ? दूसरा - पत्नी की कृपा कैसे ? पहला—पत्नी की कृपा ऐसे कि तुम आज अपनी पत्नी के आजाने के कारण ही

संजातः । अन्यथा तु…। द्वितीयः—अन्यथा किमिति ? प्रथमः—अन्यथा किं भवान् लक्षपतिः अभवत् (अभविष्यत्) ? द्वितीयः—मित्र ! एतत्तु भवतां कथनं नितान्तमेव सत्यम्, यदद्याहं स्व पत्न्या कारणेनैव लक्षपतिः अभवम्, अन्यथा तु पत्न्याः पूर्वमहम्…। प्रथमः—अन्यथा पत्न्याः पूर्वं किमासीद् भवान् ? द्वितीयः—कोटि-पतिः आसम् यदाहमद्य लक्षपतिमात्रम् अस्मि ।

(38) एका अध्यापिका एकम् बालकं भर्त्सयन्ती अवदत्—पप्पू त्वम् तम् लघ बालकं रमेश कथम् अताडयः ? पप्पू—मातः । अहम् तं नितान्तमेव न अताडयम् । अध्यापिका—किं त्वम् तं नितान्तमेव न अताडयः ? किं सः असत्यं वदति ? पप्पू--नैव मातः, सः सर्वथा मिथ्या न वदति । परम् मया तु सः न ताडितः । अध्यापिका—पुनः तदेव भणसि मया न ताडित इति, पुनरस्य रुदतः इदृशी दुरवस्था कथं जाता ? पप्पू—मातः ! एतस्य अवस्थां दृष्ट्वा तु अहमपि दुःखितोऽस्मि । परमेषः विना कारणेनैव ताडितः जातः, अन्न अत्र किम् करवाणि ? अध्यापिका—अस्तु कारणं विनैव ताडितः पुनरपि कथयसि अहम् किं करवाणि ? पप्पू—मातः मे प्रयोजनम् आसीत् यत् मया अज्ञाने एव एषा त्रुटिः जाता । अध्यापिका—अज्ञाने एवं प्रकारेण ताड्यते, तिष्ठ अहं ज्ञापयामि त्वाम्, कथयति अज्ञाने त्रुटिः जाता । पप्पू—विरम विरम मातः मदीयाम् एकां वार्तां श्रणु । अध्यापिका—श्रावय ! पप्पू—मातः मया तु एषा अल्पा त्रुटिः अज्ञाने कृता, परं भवती विज्ञाय एव महतीं त्रुटिम् कथम् करोति ?

(39) एकः ग्राहकः चर्मकारस्य समीपे गत्वा पादत्राणानि पश्यति स्म । सः चर्मकारम् उवाच—भ्रातः पादत्राणानि तु आकर्षकाणि सन्ति । पादत्राण निर्माता—तर्हि बाबू महोदय ! एकं द्वयं वा युगलं गृह्णातु एव । एतादृशानि पादत्राणानि सर्वत्र न

लखपति वने हुए हो। नहीं तो……। दूसरा—नहीं तो क्या ? पहला—नहीं तो क्या तुम लखपति होते ? दूसरा—मित्र ! यह तो तुम्हारा कहना विलकुल ठीक है कि आज मैं अपनी पत्नी के कारण ही लखपति वन गया हूँ, नहीं तो पत्नी से पहले……। पहला - पत्नी से पहले क्या थे ? दूसरा—करोड़पति था जवकि आज में सिर्फ लखपति रह गया हूँ।

(38) एक अध्यापिका वच्चे को डांटती हुई वोली कि पप्पू तूने छोटे वच्चे को क्यों मारा ? पप्पू—मैडम ! मैंने उसे विलकुल नहीं मारा। मैडम—क्या ? तूने उसे विलकुल नहीं मारा ? क्या वह झूठ वोलता है ? पप्पू—नहीं मैडम, वह झूठ विलकुल नहीं वोलता। पर मैंने तो उसे मारा नहीं। मैडम—फिर वही वात कि मैंने नहीं मारा, फिर इसका रोते-रोते इतना वुरा हाल कैसे हुआ ? पप्पू—मैडम ! इसका हाल देखकर तो मुझे भी दुःख है, परन्तु यह ऐसी ही विना वात के पिट गया, मैं इसमें क्या करूँ ? मैडम—अच्छा, विना वात के पीट डाला, और फिर कहता है कि मैं क्या करूँ ? पप्पू—मैडम, मेरा मतलव था कि मुझ से अनजाने में ही यह भूल हो गई। मैडम—अनजाने में ऐसा पीटते हैं ? ठहर, मैं तेरी अभी खवर लेती हूँ, कहता है अनजाने में। पप्पू - ठहरो, ठहरो मैडम। मेरी एक वात सुनो। मैडम—सुना। पप्पू – मैडम मेरे से तो यह भूल अनजाने में हुई थी, पर आप जानवूझ कर यह गलती क्यों कर रही हैं।

एक ग्राहक जूते वाले के पास जाकर जूते देख रहा है। उसने जूते वाले से कहा—भई, जूते तो वड़े आकर्षक लग रहे हैं। जूते वाला – वस तो वावूजी एक दो जोड़ी ले ही लीजिए। ऐसे जूते हर जगह नहीं मिलते ग्राहक—हां, कहते तो ठीक हो परन्तु एक जोड़ी का [illegible] है ? जूते

मिलन्ति। ग्राहकः—आम्, कथयसि तु समीचीनम्। परम् एक युगलस्य कियन्मूल्यम् ? निर्माता—बाबू महोदय ! शोभनवस्तूनां मूल्यं न पृष्टव्यम्। तानि तु यावन्मूल्यानि प्राप्येरन् क्रेतव्यानि एव। ग्राहकः—शोभनम्, वरम्। परमेतज्ज्ञापय यदेतानि आकर्ष- णेन सह दृढ़ानि अपि सन्तीत्यस्य किं प्रमाणम् ? निर्माता—बाबू महोदय ! इत्यस्य एतदेव प्रमाणम्, यदेतानि जीवने केवलम् एक- वारमेव क्रेतव्यानि सन्ति। द्वितीयवारं कोऽपि ग्राहकः अधुनापर्यन्तं अत्र नागतः। ग्राहकः—एकस्मिन्नेव पादत्राणेन सर्वं जीवनम्। भ्रातः वाह। अधुनैव गृह्णामि। अस्य दृढतायाः किञ्चिद् अन्यदपि प्रमाणम् अस्ति न वा ? निर्माता—महोदय अलम् कथम् ? एतानि पादत्राणानि यस्मिन्नपि पतन्ति सोऽपि एनेषाम् गुणगानं विना न तिष्ठति।

(40) द्वौ यात्रिणौ रेलयाने उपविश्य आलपतः स्म। तयोरेकः—अति कोलाहलः भवति, शकटी यदि चलेत् शान्तिः मिलेत्। एञ्जिन—यन्त्रस्य कोलाहलस्तु न्यूनः भवेत्। द्वितीयः— यन्त्रादपि अधिकः कोलाहलः तु वार्तानां श्रूयते। प्रथमः—आम् मित्र ! वार्ताः अपि अतितीव्राः भवन्ति। एते यन्त्र चालकाः जना अपि अति कोलाहलं कुर्वन्ति। शकटी चलेत् तदैव शान्तिः प्राप्येत। द्वितीयः—शान्तिरेव कथम् ? बह्व्यः शान्त्यः मिलिताः सन्ति तदैव तु कोलाहलः भवति। प्रथमः—किं प्रयोजनम् ? द्वितीयः—अस्माकं कक्षस्य पश्चात् महिला कक्षः अस्ति। तत्र बह्व्यः शान्त्यः सन्तोष्यः चोपविष्टाः सन्ति। तासामेव एषः कोलाहलः।

(41) एकः जनकः स्वपुत्रं कस्मिन्नपि विषये तर्जयति स्म। तदैव पुत्रम्—अस्य रोगस्य समयेऽपि त्वम् सुखशान्त्या नोपविश- सि का वार्ताऽस्ति ? पुत्रः—पितः चिकित्सक महोदयेन माम् प्रसन्नमानसम् स्थातुं कथितम्, क्रीडने कूर्दने च मे मनः अतीव

वाला—वावू जी ! अच्छी चीजों के भाव नहीं पूछा करते, वे तो जिस भाव भी मिलें ले ही लेनी चाहिए। ग्राहक—अच्छा, ठीक है। पर ये वात वताओ कि ये आकर्षण के साथ-साथ मजवूत भी हैं, इसका क्या सवूत है ? जूते वाला—वाबू जी इसका सवूत यही है कि, यह जीवन में केवल एक ही बार खरीदा जाता है। दूसरी वार अव तक यहाँ कोई ग्राहक नहीं आया। ग्राहक - एक ही जूते में सारी जिन्दगी, भई वाह। अभी लेता हूँ। इसकी मजवूती का कोई और सवूत भी है या वस ? जूते वाला - अजी वस क्यों ? ये जूते जिस पर भी पड़ते हैं वह भी इनके गुण गाए बिना नहीं रहता।

(40) दो यात्री एक रेलगाड़ी में बैठे वातें कर रहे थे। उनमें से पहला - वहुत शोर हो रहा है, गाड़ी चले तो कुछ शान्ति मिले इञ्जन का शोर तो कम हो। दूसरा - इञ्जन से भी ज्यादा शोर तो वातों का सुनाई दे रहा है। पहला - हाँ यार, वातें भी वहुत तेजी से हो रही हैं। ये इञ्जन चलाने वाले लोग भी वहुत शोर करते हैं। गाड़ी चले तभी शान्ति मिले। दूसरा - एक शान्ति क्यों, बहुत-सी शान्ति मिली हुई हैं तभी तो शोर हो रहा हैं। पहला - क्या मतलव ? दूसरा - हमारे से पीछे वाला जनाना डव्वा है, वहां बहुत सी शान्ति और सन्तोषी बैठी हैं, ये शोर उन्हीं का है।

(41) एक पिता अपने पुत्र को किसी वात पर डाँट रहे थे। इसी बीच वे वोले कि - इस वीमारी के समय भी तू सुख-चैन से नहीं वैठता क्या वात है ? पुत्र - पिताजी, डाक्टर ने मुझे प्रसन्न मन रहने को कहा है और खेलकूद में मेरा मन वड़ा प्रसन्न रहता है, इसीलिए... । पिता (बीच में

प्रसन्नं भवति । अतएव, पिता (मध्ये एव वार्तां कर्तयित्वा)—अतएव क्रीडनार्थम् धावसि किम् ? चपेटां खादिष्यसि । पुत्रः—पितृ महोदय ! अद्य तु वैद्यमहोदयेन अहं केवलं कृशराम् खादितुम् आदिष्टोऽस्मि न तु चपेटां खादितुम् ।

(42) पितामहः स्वं नवीनम् उपनेत्रं वारंवारं धारयित्वा अवतार्यं च पश्यति स्म । तस्य लघु पौत्री पिंकी तस्य समीपे स्थिता एतत्सर्वं पश्यति स्म । यदा पितामहेन उपनेत्रम् वारंवारम् धारितम् अवतारितञ्च तदा सा तम् अपृच्छत्—पितामह ! का वार्ताऽस्ति ? उपनेत्रस्य संयोगः भवते सम्यक् न जातः किम् ? पितामहः—न वत्से ! उपनेत्रम् तु उपयुक्त मेवास्ति परम्···। पिंकी—परम् किम् पितामह । पितामहः—वत्से वार्तेयम् अस्ति यत् प्रथमं तु मया दूरात् किमपि न दृश्यते स्म, परमधुना दूरस्थ वस्तूनि अति निकटे दृश्यन्ते । एतदेव अहम् पश्यामि स्म । पिंकी—अस्तु पितामह ! अनेन उपनेत्रेण अन्यत् किमिव दृश्यते । पितामहः – वत्से अधुना अनेन मया अतिलघूनि वस्तूनि अपि अति विशालानीव दृश्यन्ते । पिंकी—अस्तु, तदा तु भवता पिपीलिका हस्तीव दृष्टा स्यात् अहम् च····। पितामहः—वत्से अहमिति कथम् ? पिंकी—अहम् अधुना एतेन उपनेत्रेण भवन्तम् अम्बेव दृश्ये, इति ।

(43) द्वौ बालौ परस्परम् चन्द्रं सूर्यं च गमनस्य वार्तालापम् कुरुतः स्म । तयोरेकः - चन्द्रमसि तु भूवासिनः जनाः प्राप्ताः, परमन्येषु ग्रहेषु गन्तुं न शक्नुवन्ति । द्वितीयः - कथन्न गन्तुं शक्नुवन्ति । भूमितलात् प्रेषिताः उपग्रहाः तु कतिचिद् ग्रहाणां चक्रं विधाय अग्रे सूर्यं प्रति गच्छन्ति । प्रथमः - सूर्ये गन्तुम् न समर्थाः । सूर्यस्तु पावकस्य गोलः (मण्डलम्) अस्ति । द्वितीयः - अनलस्य गोलः अस्ति तदा तु अत्यानन्दः भविष्यति । तत्र गत्वा शैत्यं न लगिष्यति ।

ही वात काटकर) - इसीलिये खेलने को भाग रहे हो क्या, थप्पड़ खाओगे? पुत्र - पिताजी ! आज तो डाक्टर साहव ने मुझे केवल खिचड़ी खाने को कहा है और कुछ भी खाने को मना किया है।

(42) दादा जी अपने नए चश्मे को वार-वार पहन और उतार कर देख रहे थे। उनका छोटी पोती पिंकी उनके पास खड़ी, यह सव देख रही थी। जव दादाजी ने चश्मे को कई वार पहना और कई वार उतारा तो उसने पूछा कि - दादा जी क्या वात है? चश्मा आपको ठीक नहीं लगा क्या? दादाजी - नहीं वेटी, चश्मा तो ठीक ही है परन्तु। पिंकी - परन्तु क्या दादा जी? दादाजी - वेटी, वात यह है कि पहले तो मुझे दूर से कुछ दिखाई नहीं देता था परन्तु अव दूर की वस्तुएं वहुत पास दिखाई दे रही है यही मैं देख रहा था। पिंकी - अच्छा दादाजी इस चश्मे से और कैसा-कैसा दिखाई देता है? दादाजी - वेटी अव इससे मुझे वहुत छोटी-छोटी चीजें भी वहुत वड़ी-वड़ी दिखाई दे रही हैं। पिंकी - अच्छा तव तो आपको चींटी, हाथी जैसी दीखती होगी और मैं? दादाजी - वेटी मैं क्या? पिंकी - मैं आपको अव चश्मे से मम्मी जैसी दिखाई दे रही हूंगी।

(43) दो वालक आपस में चांद, सूरज पर पहुंचने की वातें कर रहे थे। एक - चांद पर तो पृथ्वी के लोग पहुंच चुके हैं परन्तु अन्य ग्रहों पर नहीं पहुंच सकते। दूसरा - क्यों नहीं पहुंच सकते। पृथ्वी से छोड़े गए उपग्रह तो कई ग्रहों का चक्कर लगाकर आगे सूरज की ओर भी जा रहे हैं। एक - सूरज पर नहीं जा सकते, सूरज तो आग का गोला है। दूसरा - आग का गोला है तव तो वड़ा मजा आएगा। वहां पहुंच कर

सर्दी भी नहीं लगेगी। एक - देखते नहीं, सूरज कितना गरम होता है यहां

प्रथमः—पश्यसि नैव सूर्यः कियान् उष्णः भवति। तत्र गन्ता तु अचिरमेव भस्म भविष्यति। द्वितीयः—अतएव तु अहं कथयामि यत् कश्चदपि ग्रीष्मे सूर्यं कथं गच्छेत् शीतकाले गच्छेत्। प्रथमः—तत्र दिनानि अति दाहकानि (उष्णानि) भवन्ति यः कोऽपि गमिष्यति दह्यिष्यते एव। द्वितीयः—अरे भ्रातः पुनः सैव वार्ता। तत्र द्विवसे कथं गच्छेत् रात्रौ गच्छतु।

(44) एकस्मिन् कवि सम्मेलने बहव श्रोतारः उपविश्य कविता श्रवणस्य आनन्दम् अनुभवन्ति स्म। कदापि वाहवाह, कदापि तालिकाः, कदापि च परिहासेन वातावरणम् गुञ्जायमानं भवति स्म। परं श्रोतृषु एकः आगन्तुके प्रत्येकस्मिन् कवौ किमपि व्यंग्यं करोति स्म। अनेन सकलाः एव कवयः उद्विग्नाः आसन्। परं किं क्रियेत इति कस्यचिदपि मनसि न आगच्छत्। एतस्मिन्नेव वातावरणे एकः कविबन्धुः स्व कविता श्रावणाय उदतिष्ठत्। तस्य उत्थिते एव कवौ वार्तां क्षिपन् स श्रोता अपृच्छत्—महोदय कृपया कविता श्रावणात्पूर्वं भवान् वदतु यत् गर्दभस्य शिरसि कति केशाः भवन्ति? कविः एकदा तु अतीव असमंजसे जातः। परं शीघ्रमेव धैर्यमवलम्ब्य तमवदत्—वार्ता तु सुष्ठुः एवास्ति। परं भवान् मंचात् अति दूरे उपविष्टः किञ्चित् समीपम् आगच्छतु। श्रोता—कथम् का वार्ताऽस्ति? कविः—अहम् भवच्छिरः दृष्ट्वा अधुनैव वदामि यत् गर्दभस्य शिरसि कति केशाः भवन्ति।

(45) एकदा त्रयः गप्पिनः स्वं स्वं गप्पं कुर्वन्ति स्म—
प्रथमः—मम पितामहस्य काले वायुयानानि अन्तरिक्षम्

संस्पृश्य चलन्ति स्म।

जाने वाला तो तुरन्त जल जायेगा। दूसरा - इसी लिये तो मैं कहता हूँ कि कोई गर्मियों में सूरज पर क्यों जाये, सर्दियों में जाये। एक - वहाँ दिन भी वड़े झुलसाने वाले होते हैं, जो कोई भी जाएगा जल ही जायेगा। दूसरा - अरे भई फिर वही बात। वहां कोई दिन में ही क्यों जायेगा, रात में चला जाये।

(44) एक कवि सम्मेलन में वहुत से श्रोता वैठे कविता सुनने का आनन्द ले रहे थे। कभी वाहवाह, कभी तालियों और हंसी मजाक से सारा वातावरण गूंज उठता था। परन्तु श्रोताओं में से एक श्रोता आने वाले हर कवि पर कुछ न कुछ व्यंग्य कस रहा था। इससे सभी कविगण वहुत परेशान दिखाई दे रहे थे। परन्तु क्या किया जाए. किसी के कुछ समझ में नहीं आ रहा था। ठीक ऐसे ही वातावरण में एक कवि बन्धु अपनी कविता सुनाने के लिए खड़े हुये। उनके खड़े होते ही श्रोता ने तुरंत कवि पर वात मारते हुए पूछा कि—महोदय! कृपया कविता सुनाने से पहले आप वतायें कि गधे के सिर पर कितने बाल होते हैं? कवि एक वार तो वड़े असमंजस में पड़ गए, परन्तु शीघ्र ही संभल कर उससे वोले—बात तो ठीक ही है परन्तु आप मंच से बहुत दूर बैठे हैं, जरा पास आ जायें। श्रोता - क्यों, क्या वात है? कवि—मैं आपका सिर देख कर अभी बता देता हूं कि गधे के सिर पर कितने वाल होते हैं।

(45) एक वार तीन गप्पी अपनी-अपनी गप्पें हांक रहे थे—
पहला—मेरे दादा के जमाने में हवाई जहाज आसमान को छू कर चलते थे।

द्वितीयः—किम् अन्तरिक्षं संस्पृश्य ?

प्रथमः—नैव, अंगुली द्वयम् अधस्तात् ।

द्वितीयः—मदीय पितामहस्य काले समुद्र पोताः समुद्रस्य तलं संस्पृश्य चलन्ति स्म ।

तृतीयः—किम् तलं संस्पृश्य ?

द्वितीयः—नैव, अंगुलीद्वयम् उपरिष्टात् ।

तृतीयः—मे पितामहस्य समये जनाः नासाभिः भक्षयन्ति स्म ।

प्रथमः—किमुक्तम्, नासाभिः ?

तृतीयः—नैव, अंगुलीद्वयम् अधस्तात् ।

(46) त्रयः गप्पिनः

प्रथमः—मम पितामहः यदा समुद्रे स्नाति स्म तदा निमग्नो भूत्वा दिनं यावन्न निस्सरति स्म ।

द्वितीयः—एषाऽपि काचिद् वार्ता ? मे पितामहः तु समुद्रे निमग्नो भूत्वा मासं वर्षं वा यावत् उपरि न आगच्छति स्म ।

तृतीयः—त्वम् मासस्य वर्षस्य च वार्ताम् करोषि । मम पितामहः महोदयस्तु वर्षशतम् पूर्वं समुद्रे निमग्नः अभवत् स अद्य पर्यन्तम् अपि उपरि नागच्छत् ।

(47) एकः अध्यापकः शिक्षणानन्तरम् छात्रान् उक्तवान् यदपि पृष्टव्यं स्यात् पृच्छन्तु ।

एक छात्रः—श्रीमान् "अहम् न वेद्मि" इत्यस्य कोऽर्थः ?

अध्यापकः—अहम् न जानामि ।

छात्रः—एं, किम् भवानपि न जानाति ! तर्हि अहम् अधुना कस्मात् पृच्छेयम् ?

दूसरा—क्या आसमान को छूकर ?

पहला—नहीं दो अंगुल नीचे ।

दूसरा—मेरे दादा के जमाने में समुद्री जहाज समुद्र के तले को छू कर चलते थे ।

तीसरा—क्या तले को छूकर ?

दूसरा—नहीं, दो अंगुल ऊपर ।

तीसरा—मेरे दादा के जमाने में लोग नाक से खाया करते थे ।

पहला—क्या कहा नाक से ?

तीसरा—नहीं दो अंगुल नीचे से ।

(46) तीन गप्पी

पहला:—मेरे दादा जी जब समुद्र में नहाते तो गोता लगाकर पूरे दिन भर नहीं निकलते थे ।

दूसरा:—यह भी कोई बात रही ? मेरे दादा जी तो समुद्र में गोता लगा कर महीनों और वर्षों तक ऊपर नहीं निकलते थे ।

तीसरा:—तू महीनों और वर्षों की बात करता है । मेरे दादा जी ने तो सौ साल पहले गोता लगाया था और वे आज तक ऊपर नहीं आए ।

(47) एक अध्यापक ने पढ़ाने के बाद बच्चों से कहा कि जो पूछना हो पूछलो ।

एक छात्र—सर, "अहम् न वेद्मि" इसका अर्थ क्या है ?

अध्यापक—मैं नहीं जानता ।

छात्र—एँ, आप नहीं जानते, तो मैं अब किससे पूछूं ?

(48) एकः (द्वितीयम्)—त्वया मे कलमम् कथं चोरितम् ? द्वितीयः—कलमे लिखितः आसीत् "पारकर" मया तत् पारितम् ।

(49) एकः सज्जनः अन्यम् 'नमस्ते' इति उवाच । द्वितीयः—तूष्णीम् । प्रथमः—अरे भ्रातः ! मयोक्तम् नमस्ते इति । द्वितीयः—तूष्णीम् भव । अहम् मूर्खैः सह वार्ता न करोमि । प्रथमः—अस्तु कापि वार्ता नास्ति । त्वम् वार्ताम् न कुरु, परमहम् तु मूर्खैः सह वार्ताम् करोमि "नमस्ते महोदय" ।

(50) एकस्मिन् साक्षात्कारे पृच्छकः एकं प्रत्याशिनम् अपृच्छत्—भवतः अस्मिन् विषये कोऽपि अनुभवः अस्ति किम् ? प्रत्याशी—अनुभवः, सर्वथा नैव । पृच्छकः—भवता पूर्वम् अत्र विषये कापि शिक्षा गृहीता किम् ? प्रत्याशी—महोदय शिक्षणस्य वार्ताम् त्यज, मया तु श्रुतमपि नैव । पृच्छकः—भवान् किमपि पठितः लिखितः अस्ति किम् ? प्रत्याशी—पठनं लेखनं तु मे पिता पितामहः अपि कदापि न अकुरुताम् । पृच्छकः—अत्र कार्यं कर्तुम् वाञ्छति किम् ? प्रत्याशी—महोदय नितान्तं नैव । पृच्छकः—पुनः अत्र कथम् आगतः ? वहिर् भव । प्रत्याशी—वरम् गच्छामि परमहन्तु केवम् इदमेव वक्तुम् समागतः यत् ममागमन विषये न तिष्ठन्तु । कञ्चिद् अन्यम् रक्षतु ।

(51) एकदा केचिज्जनाः वस यानारोहणे द्वारे एव अवलम्बिताः आसन् । तेषु एका स्त्री दण्डम् न गृहीत्वा समक्षे लम्बमानम् रज्जुम् एव आश्रयत् । अग्रतः एकः जनः ताम् अवदत्—मातः दण्डम् गृह्णातु तावत् । स्त्री—भवान् चिन्ताम् न करोतु, मया दृढ़तया दण्डः गृहीतः अस्ति न पतिष्यामि । जनः—माम् भवत्पतनस्य चिन्ता नास्ति अपितु स्व गलवस्त्रस्य चिन्ताऽस्ति, यद् भवत्या गृहीतम् अस्ति ।

(48) एक (दूसरे से)—तुमने मेरा पैंन क्यों चुराया ?

दूसरा:—पैन पर लिखा था 'पारकर' वस मैंने उसे पार कर दिया।

(49) एक सज्जन ने दूसरे से नमस्ते की।

दूसरा:—चुप।

पहला: – अरे भाई मैंने कहा नमस्ते।

दूसरा: – चुप रहो, मैं मूर्खो से वात नहीं करता।

पहला:—खैर, कोई वात नहीं, तुम मत करो। परन्तु मैं तो मूर्खों से वात करता हूं 'नमस्ते जो'।

(50) एक इन्टरव्यू में एक उम्मीदवार से पृच्छक ने पूछा—आपका इस विषय में कुछ तजुर्वा है ?

उम्मीदवार: – तजुर्वा, विल्कुल नहीं।

पृच्छक:—आपने पहले इस विषय में कुछ सीखा है ?

उम्मीदवार: - अजी सीखने की वात छोड़ो, मैंने तो सुना भी नहीं।

पृच्छक: - आप कुछ पढ़े लिखे हो ?

उम्मीदवार: - पढ़ाई-लिखाई तो मेरे वाप दादे ने भी कभी नहीं की।

पृच्छक: - यहां काम करना चाहते हो ?

उम्मीदवार: - जी विल्कुल नहीं।

पृच्छक: - फिर यहां किस लिए आए हो, निकल जाओ।

उम्मीदवार: - ठीक है जाता हूं पर मैं तो सिर्फ यही कहने को आया था कि मेरे भरोसे न रहकर किसी और को रख लेना।

(51) एक वार बस में चढ़ते समय कुछ लोग दरवाजे पर ही लटके हुए थे। उनमें से एक स्त्री ने हत्था न पकड़ कर सामने लटकी हुई एक रस्सी को पकड़ लिया। आगे से एक आदमी उससे बोला - मैंडम हत्था पकड़ लीजिये। स्त्री - आप चिन्ता मत कीजिये। मैंने मजबूती से हैंडिल पकड़ रखा है। गिरूंगी नहीं। आदमी - मुझे आपके गिरने की चिन्ता नहीं है, अपितु अपनी टाई की चिन्ता है, जो आपने पकड़ रखी है।

(52) एकः वृद्धः ग्रामीणः निज वृद्धया सह रेलस्थासने स्थितः यात्रापत्रकारिणं पृच्छति स्म—किं त्रिवादन गामिनी शकटी गता ? यात्रापत्रकारी—आम्, होरार्धम् पूर्वमेव गता । वृद्धः—आगामी-यानागमने कियान्कालः अस्ति ? यात्रापत्रकारी—चत्वारिंशत् निमिडानि पश्चात् आगमिष्यति । वृद्धः—किं ततः पूर्वमपि काचित् शकटी आगमिष्यति ? यात्रापत्रकारी (क्षुब्धः सन्) नैव । वृद्धः—काचित् वस्तु वाहिनी शकटी अपि न ? यात्रापत्रदः (अतीव क्षुब्धो भूत्वा) न, न, न । वृद्धः स्वां वृद्धाम्—आगच्छ अधुना रेलमार्गस्य पारगमने काचिदपि विपत्तिः नास्ति ।

(53) यदाऽहं बालः आसम् तदा चलच्चित्र दर्शने मम अतीव रुचिः आसीत् । यदैव अवसरम् अलप्स्ये तदैव चलचित्र दृष्टुम् अधावम् । मे गुरुः अपि चेतावनी प्रदत्ता यद् अथ पश्चात् चलचित्रं दृष्टुं मा गच्छ । अहम् अपृच्छम् कथम् ? गुरुः महोदयः अवदत्—अतएव यत् त्वम् यदपि वस्तु तत्र द्रक्ष्यसि तत् त्वया न दृष्टव्यम् । अग्रिमे दिवसे पितुः वारणे अपि अहम् चलचित्रं दृष्टुम् अगच्छम् । तत्र गत्वा मया यद् दृष्टम् तन्मया अदृष्टव्यम् एवासीत् वस्तुतः । तत्र मदीयः गुरुः आसीत् । चलचित्रं पश्यति स्म ।

(54) एकः बसयात्री (संवाहकम्)—भ्रातः किमहम् अत्र बसयाने धूम्रपानं कर्तुं शक्नवानि ? संवाहकः—त्वमेतम् लेखितम् न वाचयसि यत् "धूम्रपानं निषेधम्" इति । पुनरत्र बसयाने धूम्रपानं कर्तुं कथं समर्थोऽसि । यात्री—यद्येम् तर्हि सः यात्री (एकम् संकेतयन्) वीटिकां कथं पिबति ? तं कथं न वर्जयति भवान् ? संवाहकः—तम् अहं कथं वारयितुं शक्नोमि ? यात्रीः—यथा माम् वारयति भवान् । संवाहकः—भवन्तम् अहम् अतएव वर्जयामि यत् भवान् मत् पृच्छति । परम् तेन मत्तः न पृष्टः ।

(52) एक बूढ़ा देहाती अपनी बुढ़िया के साथ रेलवे स्टेशन पर खडा टिकट बाबू से पूछ रहा था - क्या तीन बजे वाली गाड़ी गई ? टिकट बाबू - हाँ आधा घण्टा पहले गई है। बूढ़ा - अगली आने में कितनी देर है ? टिकट बाबू - अभी चालीस मिनट पीछे आएगी। बूढ़ा - क्या उससे पहले भी कोई गाड़ी आएगी ? टिकट बाबू - (झुंझलाता हुआ) नहीं। बूढ़ा - कोई माल गाड़ी भी नहीं ? टिकट बाबू - (खीजकर) नहीं, नहीं, नहीं। बू ा अपनी बुढ़िया से बोला - आओ अब रेल पटरी पार करने में कोई खतरा नहीं है।

(53) जब मैं छोटा था तो चलचित्र देखने का बहुत ही शौकीन था। जब भी अवसर मिलता देखने भाग जाता था। मेरे गुरू ने भी चेताया कि - आगे से सिनेमा देखने मत जाना। मैंने पूछा क्यों ? गुरू जी बोले - इसलिए कि तुम जो चीजें वहां देखोगे वे तुम्हें नहीं देखनी चाहियें। अगले दिन पिताजी के मना करने पर भी मैं चलचित्र देखने पहुंच गया। और वहां जाकर जो देखा वह मुझे वास्तव में नहीं देखना चाहिए था। और वह थे मेरे गुरू जी, जो वहां बैठे चलचित्र देख रहे थे।

(54) एक यात्री (बस कण्डक्टर से) - भाई मैं बस में बीड़ी पी सकता हूं। कण्डक्टर - देखते नहीं इस लिखे हुये को कि "धूम्रपान निषेध है" फिर यहां बस में बीडी कैसे पी सकते हो ? यात्री - यदि ऐसा है तो वह यात्री (एक यात्री की ओर संकेत करके) बीड़ी क्यों पी रहा है ? उसे आप क्यों नहीं रोकते ? कण्डक्टर - मैं उसे क्यों रोकूं ? यात्री - जैसे आप मुझे रोक रहे हैं। कन्डक्टर - आपको तो इसलिए रोक रहा हूं कि आपने मेरे से पूछा है। उसने क्या मेरे से पूछा है ?

(55) एकस्मिन् ग्रामे तिस्रः महिलाः कूपात् जलम् आनेतुम् गच्छन्ति स्म । तासु एका अवदत्—किञ्चिद् अपसृत्य चलन्तुतराम्, अग्रे कोऽपि जनः मूत्रं करोति । द्वितीया— आम् सम्यगेव एतेषां जनानां कः विश्वास ? सपदि एव तृतीया समक्षे दृष्ट्वा अवदत्— मया दृष्टः, अनेन भयस्य कापि वार्ता नास्ति, निःशंकम् आगच्छतम् । अपरे अवदताम्—कथम्, कोऽस्ति एषः ! तृतीया—अरे, सः केवलम् विद्यालयशिक्षकः अस्ति ।

(56) एकः बाबू महोदयः शीतस्य दिने प्रातःकाले एकस्मिन् होतले प्राप्तः सेवकम् चावदत्—भ्रातः यदि किमपि उष्णोष्णम् वस्तु स्याद् आनय । सेवकः—महोदय अधुना पर्यन्तं तु किमपि सज्जितं नास्ति किमू आनयानि ? बाबू—अरे किमपि तु सज्जितं भविष्यति एव । सेवकः—महोदय यथा कथितम् पूर्वमेव अधुनैव तु किमपि सज्जितं नास्ति । बाबू—एतत् कथं भवितुम् अर्हति ? एषः होतलः अस्ति, यदपि उष्णोष्णम् स्याद् आनय । सेवकः—आम् महोदय एकं वस्तु सज्जितम् अस्ति । बाबू—आम् एषा वार्ताऽस्ति पुनः चिरम् न विधेहि कथय किमस्ति ? सेवकः—उष्णानि अंगाराणिसज्जितानि सन्ति, यदि कथयतु आनयामि ।

(57) एकः ग्रामः "मूर्खाणां ग्रामः" इति कथ्यते स्म । ते यथातथा स्व बालान् अध्याप्य शताब्दीभ्यः समागतां स्व मूर्खताम् उच्छेत्तुम् ऐच्छन् । ग्राम जनाः मिलित्वा तत्रत्यम् एकम् महाधिकारिणम् आकारयन् । तञ्चाकथयन्—महोदय भवान् स्वयमेव पश्यतु साम्प्रतम् अत्र कोऽपि मूर्खः नास्ति । अधिकारी अति प्रसन्नः अभवत् स तेषां भूरि-भूरि प्रशंसाम् अकरोत् । चायपानस्य अनन्तरं स अधिकारी ग्रामात् बहिरेव अगच्छत तदैव ग्रामाद् एकः जनः

(55) एक गांव में तीन औरतें कूएं से पानी भरने जा रहीं थीं। उनमें से एक बोली—जरा बचके चलना, सामने कोई आदमी पेशाव कर रहा है। दूसरी—हाँ ठीक तो है इन मर्दों का क्या भरोसा, तुरन्त तीसरी ने सामने देखकर कहा—मैंने देख लिया इससे डरने की कोई बात नहीं है, बेखटके होकर चलो। सब बोलीं क्यों, कौन है ये ? तीसरी—अरी वही एक स्कूल मास्टर है। बस।

(56) एक साहब ठण्ड के दिनों में सवेरे-सवेरे एक होटल पर पहुँचे और बैटर से बोले—भई कुछ गरमागरम चीज है तो ले आओ। बैरा—साहब अभी तो कुछ भी तैयार नहीं है, क्या लाऊँ ? साहब—अरे कुछ तो तैयार होगा। बैरा—साहब ! मैंने बोला अभी कुछ भी तैयार नहीं है। साहब—ऐसा कैसे हो सकता है ? ये होटल है जो भी गरमागरम हो ले आओ। बैरा—हाँ साहब एक चीज तैयार है। साहब—हाँ ये बात हुई, फिर देरी काहे की, जल्दी बताओ क्या है ? बैरा—गरमागरम कोयले हैं, कहें तो लाऊँ ? साहब—चुप।

(57) एक गांव "मूर्खों का गांव" कहलाता था, उन्होंने जैसे-तैसे करके सब बच्चों को पढ़ा-लिखा कर सदियों पुरानी अपनी मूर्खता को मिटाना चाहा। मिलकर गांव वालों ने वहां के एक बड़े अफसर को बुलाया और कहा कि साहब आप स्वयं देख लीजिए अब हमारे यहाँ कोई मूर्ख नहीं है। अफसर बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने गांव वालों की प्रशंसा की। चाय-पान के बाद अफसर विदा होकर गांव से बाहर तक ही गया था कि

उच्चैः वदन् धावन् च आगच्छत् अवदत् च—महोदय वयं भवते समोषेण सह अवलेहदानम् तु अविस्मरन् एव, गृह्णातु अधुना अवलेहं भक्षतु ।

(58) एकः स्वामी स्वभृत्यम्—स्तोकम् (मनाक्) कपाटम् उद्घाट्य वहिः पश्य यत् सूर्यः उदयति न वा । भृत्यः—स्वामि ! वहिस्तु अधुना अति अन्धकारः वर्तते । स्वामी—अये अन्धकारात् विभेषि मूर्ख ! भृत्यः—न न स्वामि अधुना अति अन्धकारः अति अन्धकारः अस्ति दर्शनस्य का आवश्यकता अस्ति । स्वामी—आवश्यकता अस्ति । यदि अन्धकारे सूर्यः न दृश्यते तर्हि दीपं प्रज्वाल्य पश्य ।

(59) एकः हितैषी रोगिणः दशाम् प्रच्छन् अवदत्—अधुना भवतः कः समाचारः ? रोगी—महोदय ! पूर्वस्मात् स्वस्थः अस्मि । हितैषी—किं ज्वरः त्रुटितः ? रोगी—आम् ज्वरः तु त्रुटितः, परं ग्रीवायाम् पीडा वर्तते । हितैषी—सम्यक् सम्यक् । अस्माकं शुभ-कामना अस्ति । यदा ज्वर त्रुटितः, एकस्मिन् दिवसे ग्रीवा अपि त्रुटिष्यति ।

(60) एकः वैद्यः चक्षमां (चश्मा) संयोजन—इच्छुकम् ग्राहकम् अवदत्—भवता कीदृशा चक्षमा इष्यते ? ग्राहकः - एतादृशाम् चक्षमाम् संयोजयतु यथाऽहं ज्ञातुं शक्नवानि । वैद्यः - कम् ज्ञातुम् इच्छति भवान् ? ग्राहकः - महोदय, अद्यत्वे वालक-वालिकाः । वैद्यः - कथं का वार्ता अभवत् ? ग्राहकः - कदापि वालकः वालिका इव, वालिका च वालकः इव प्रतीयते ।

गांव की ओर से एक आदमी चिल्लाता, भागता हुआ आया और बोला कि साहब हम आपको समोसे के साथ चटनी देना तो भूल गए थे, लीजिये अब चटनी खाइये।

(58) एक मालिक नौकर से—जरा किवाड़ खोल कर बाहर देखो कि सूरज निकला है या नहीं ? नौकर—स्वामी बाहर तो अभी बहुत अन्धेरा है। स्वामी—अबे अन्धेरे से डरता है मूर्ख। नौकर—नहीं मालिक अभी बहुत अन्धेरा है देखने की क्या आवश्यकता है ? स्वामी—आवश्यकता है यदि अन्धेरे में सूरज न दिख रहा हो तो लैम्प जलाकर देख ले।

(59) एक हितैषी ने मरीज का हाल पूछते हुए कहा—अब आपका क्या हाल है ? मरीज—जी पहले से ठीक हूं। हितैषी—क्या बुखार टूट गया ? मरीज—हां, बस गर्दन में दर्द है, बुखार तो टूट गया। हितैषी—ठीक है हमारी शुभ कामना है जब बुखार टूट गया तो एक दिन गर्दन भी टूट जाएगी।

(60) एक डाक्टर चश्मा लगवाने वाले ग्राहक से—आपको कैसा चश्मा चाहिये। ग्राहक—ऐसा चश्मा लगाइये जिससे मैं पहचान सकूं। डाक्टर—किसको पहचानना चाहते हैं आप। ग्राहक—जी आजकल के लड़के-लड़कियों को। डाक्टर—क्यों क्या बात हुई ? ग्राहक—कभी-कभी लड़का, लड़की-सा और लड़की, लड़का-सा दिखाई देते हैं ?

(61) एकः लघु बालकः स्वपितरम् अवदत् - पितः ! सर्वे विवाहं कुर्वन्ति किम् भवता अपि विवाहः कृतः ? पिता - आम् पुत्र । यदि विवाहं न अकरिष्यम् तर्हि त्वमत्र कथम् आगमिष्यः ? बालः - यथा भवान् अत्र प्राप्तः तथैव अहमपि आगमिष्यम् । पिता - सत्यम् । बालः अस्तु वदतु भवता केन सह विवाहः कृतः ? पिता - तव मात्रा सह । बालः - हां, भवता मे मात्रा सह विवाहः कृतः । तर्हि वरम्, अहमपि भवन्मात्रा सह विवाहं करिष्यामि ।

(62) एकः लघुबालः स्वमातरम् - अम्बा, ईद पर्वणः दिने एव जनाः परस्परं गलं मेलयन्ति किमु ? अम्बा - आम् सत्यमेव, बालः - तर्हि अद्य ईद पर्वणः पणानि यच्छतु । अम्बा परम् अद्य तु ईद पर्व नास्ति । बालः - न अम्बा, गलमेलनस्य पर्व तु अद्यैव अस्ति । अम्बा - न, ईद अद्य नास्ति । बालः - यदि अद्य ईद नास्ति तर्हि पार्श्वकक्षे पिता आण्टी च गलौ कथं मेलयतः ।

(63) रुग्णः एकं द्रागतरम् - द्रागतर महोदय ! अहम् अतीव निर्धनः अस्मि, भवतः शुल्कस्य पणम् अपि दातुं न समर्थः । आम् शुल्कस्य विपर्यासे अहम् भवतः भवत्परिवारस्य च कृते निःशुल्कमेव कार्यं कर्तुं शक्नोमि ? द्रागतरः - वाह, अत्युत्तमम् । कथय, अस्मभ्यं किं कार्यं कर्तुं शक्नोमि ? रुग्णः - महोदय अहम् भवद्भ्यः कब्रं खनितुं शक्नोमि ।

(64) कस्मिंश्चित् स्थाने सायंकाले एकः रुग्णः चिकित्सकम् अन्विष्यन् चिकित्सक - वसतौ अगच्छत् तत्र चापश्यत् यत्सर्वेषां चिकित्सकानां द्वारे काश्चित् मोमवर्तिकाः प्रज्वलिताः आसन्,

(61) एक छोटा वालक अपने पिता से—पिता जी, सब शादी करते हैं, क्या आपने भी शादी की ? पिता—हां वेटे ! शादी न करता तो तुम यहां कैसे आतें ? वालक—जैसे आप आए वैसे मैं भी आता। पिता—सत्य है। वालक— अच्छा वताइये आपने किससे शादी की ? पिता—तुम्हारी मम्मी से। वालक—हूँ तुमने मेरी मम्मी से शादी की है। तो ठीक है मैं तुम्हारी मम्मी से शादी करूँगा।

(62) एक छोटा वालक अपनी अम्मी से—अम्मा ईद वाले दिन लोग गले मिलते हैं ना ? अम्मी—हां वेटे ठीक तो है। वालक—तो अम्मा आज हमें ईद के पैसे दो। अम्मा - पर वेटे आज तो ईद नहीं है। वालक - नहीं अम्मा गले मिलने वाली ईद आज ही है। अम्मा - नहीं, ईद आज नहीं है। वालक - यदि ईद आज नहीं है तो वरावर के कमरे में अब्बा और आंटी गले क्यों मिल रहे हैं।

(63) रोगी एक डाक्टर से - डाक्टर साहव मैं वहुत गरीव हूं आपको मैं फीस नहीं दे सकता। हाँ, फीस के वदले में आपके लिए और आपके परिवार के लिये मैं मुफ्त में काम कर सकता हूँ। डाक्टर - वाह, वहुत अच्छा। वताओ तुम हमारे लिए क्या काम कर सकते हो ? रोगी - जी कब्र खोद सकता हूँ।

(64) एक रोगी किसी स्थान पर शाम के समय डाक्टर को ढूंढता डाक्टरों की वस्ती में पहुँचा और वहां देखा कि सभी डाक्टरों के द्वार पर कुछ मोमवत्तियां जली हुई हैं, केवल एक डाक्टर के द्वार पर मोमवत्ती

केवलम् एकस्य द्वारे मोमवर्तिकाः न आसन् । सः एकाम् व्यक्तिम् अपृच्छत्-यदत्र द्वारे मोमवर्तिका प्रज्वालनस्य किं प्रयोजनम् ? व्यक्तिः-यस्य चिकित्सकस्य यावन्तः रोगिणः मृताः, तावत्यः एव वर्तिकाः द्वारे प्रज्वलिताः सन्ति । रुग्णः किञ्चिद् विचार्य वर्तिकाः द्वारे न प्रज्वालितस्य चिकित्सकस्य समीपे अगच्छत् अवदत् च चिकित्सक महोदय ! सत्यमेव भवान् अति प्रवीणः, तदैव तु भवतः एकोऽपि रोगी न मृतः । एतस्मादेव कारणात् भवद् द्वारे एकाऽपि वर्तिका न प्रज्वलति । चिकित्सकः-तथ्येन वार्तेयम् अस्ति यद् अधुना पर्यन्तं मम समीपे कश्चिदपि रुग्णः न प्राप्तः । आम् अद्य भवान् प्राप्तः वर्तिका अवश्यमेव ज्वलिष्यति ।

(65) एकदा ग्रीष्मकाले एकस्मिन् स्थाने रात्रौ सहसा विद्युत् गता । तर्हि गृहे मोमवर्तिकाः प्रज्वालिताः । उष्णता अतीवासीत् अतः आगन्तुकः अवदत्— भ्रात व्यजनं तु चालय । द्वितीयः सपदि उवाच-न न व्यजनं तिष्ठतु, व्यजनस्य चालनेन तु मोम वर्तिकाः शान्ताः भविष्यन्ति ।

(66) एकः कृपणः ग्राहकः आपणिकम् अवदत्-श्रेष्ठी महोदय घृतस्य किम् मूल्यम् ? आपणिकः—पञ्चाशत् रुप्यकैः किलोमात्रम्, वद कियद् इष्टम् ? ग्राहकः—अस्ति तु अतीव महार्घम् परं नास्ति कापि वार्ता पञ्चविंशति पणकानां यच्छ । आपणिकः-केवलं पञ्चविंशतिपणकानामेव, आनय पणकानि । ग्राहकः-गृहाण पणकानि । आपणिकः-वरम्, पञ्चविंशतिपणकैः तु केवलं दृष्टुम् समर्थोऽसि, तदस्ति घृतम् । दूराय पश्य धाव च ।

(67) एकः जनकः स्वचतुरं पुत्रम्—किं त्वमद्य स्वप्रेमिकया सह भ्रमणार्थम् अगच्छः । पुत्रः—आम् अगमम् । पिता-पुनस्तु

नहीं जली थी। उसने किसी व्यक्ति से पूछा कि यहां मोमबत्तियों के जलाने न जलाने का क्या मतलब है। वह व्यक्ति बोला—जिस डाक्टर के जितने मरीज मर चुके हैं वहां उतनी ही मोमबत्तियां जल रही हैं। रोगी कुछ सोचकर मोमबत्ती न जलाने वाले डाक्टर के पास पहुंचा और बोला— डाक्टर साहब! सचमुच आप बड़े होशियार हैं जो आपका एक भी मरीज नहीं मरा और इसीलिये आपके द्वार पर कोई मोमबत्ती नहीं जल रही है। डाक्टर - असल बात यह है कि अब तक मेरे पास कोई मरीज आया ही नहीं। हाँ आज आप आ गए हैं मोमबत्ती अवश्य जल जायेगी।

(65) एक बार गर्मी में एक स्थान पर रात को अचानक बिजली चली गई तो घर में मोमबत्ती जला दी गई। गर्मी बहुत थी, अतः एक मेहमान ने कहा—भई पंखे तो चला दो। दूसरे ने झट कहा नहीं, पंखा रहने दो, पंखा चलाने से तो मोमबत्तियां बुझ जाएंगी।

(66) एक कंजूस गाहक दुकानदार से बोला—सेठ जी घी क्या भाव है? दुकानदार—पचास रुपये में एक किलो। बोलो कितना चाहिये। गाहक - है तो बहुत मंहगा, पर कोई बात नहीं 25 पैसे का दे दो। दुकानदार—बस 25 पैसे का, अच्छा लाओ पैसे। गाहक - लो 25 पैसे। दुकानदार—ठीक है, 25 पैसे में तो केवल देख सकते हो। वह रखा है घी। दूर से देखो और फूटो।

(67) एक पिता अपने चतुर बेटे से—बोला आज तू अपनी प्रेमिका के साथ घूमने गया था? बेटा—जी गया था। पिता—फिर क्या बोलता

होतले उपविश्य सहैव भुक्तं पीतमपि अभविष्यत् । पुत्रः आम् महोदय । भुक्तं पीतमपि । जनकः—अस्तु वद कियान् व्ययः सञ्जातः । पुत्रः—विंशतिरुप्यकाणि । जनकः एपस्तु कोऽपि अधिकः व्ययः नास्ति । पुत्रः—एतस्माद् अधिकानि तस्याः समीपे एव न आसन् ।

(68) एकः बाबू होतले गत्वा—वेतर, वेतर इति अवदत् वेतरः (आगत्य)—बाबू महोदय । बाबू—तव होतले किं किमस्ति ? शीघ्रम् आनय क्षुधा बाधते । वेतरः (केषाञ्चित् वस्तूनां मूल्यं संयुज्य देयपत्रं करोति) गृहणातु बाबू 110 रुप्यकाणां देयपत्रम् अस्ति । रुप्यकाणि यच्छतु । बाबू-अरे देयपत्रं तु भोजनस्य पश्चात् दीयते त्वं प्रागेव यच्छसि । वेतरः—वार्ता एषा अस्ति यद् ह्यः एकः बाबू भुक्त्वा एव मृतः । तस्य देयं मयैव दत्तम् । अतः अहम् प्रथममेव रुप्यकाणि गृह्णामि ।

(69) एकः मद्यपः जनः शुष्के प्रवाहके प्रविष्टः सन् चिरात् किमपि अन्वेपयति स्म । एकः. रक्षकः तं दृष्ट्वा अपृच्छत्—भो चिरात् किम् अन्वेषयसि ! मद्यपः—रक्षक महोदय । अहं भवत्कृते एव अन्वेषयामि । रक्षकः—हं मम कृते, किम् मार्गयसि ! मद्यपः—दश रुप्यकाणां नाणकम् अस्ति । मम कृते न भवेत् भवते दानार्थम् एव स्यात् । रक्षकः—किम् त्वम् जानासि नाणकम् अत्रैव पतितम् ? मद्यपः—महोदय पतनविषये तु अहम् न जानामि परं मार्गणे का हानिः ?

(70) एकः महानुभावः कस्यचित् स्वमित्रस्य द्वारम् अताडयत् आभ्यन्तः तस्य वालिकया द्वारम् उद्घाटयत् । तदैव अन्यस्मात् कक्षात् पिता अपृच्छत्-वत्से कोऽस्ति ? बालिका-पितृमहोदय ! स

हूं उनके लिए। वेटा—यहां कि विलकुल तो होटल में बैठकर साथ खाया पिया भी होगा। वेटा—जी खाया पिया था। पिता—अच्छा वताओ कितना खर्चा हुआ। वेटा—जी 20 रुपये। पिता—अच्छा ये तो कोई ज्यादा नहीं हुए। वेटा - जी इससे ज्यादा उसके पास थे ही नहीं।

(68) एक वावू जी होटल में जाकर—वेटर वेटर पुकारने लगा वेटर (आकर)—जी वावू जी। वावू - तुम्हारे होटल में क्या 2 है। जल्दी लाओ भूख लगी है। वेटर (कुछ वस्तुओं का मूल्य गिनकर विल वनाता है) लीजिये वावू जी 110 रु. का बिल है, रुपये दीजिये। वावू—अरे विल तो पीछे दिया जाता है, तुम पहले क्यों ? वेटर - वात ये है कल एक वावू खाते ही मर गया था और उसका विल मुझे भरना पड़ा। आज मैं रिस्क नहीं ले सकता।

(69) एक नशे वाज आदमी सूखे नाले में घुसा हुआ बहुत देर से कुछ ढूंढ़ रहा था। एक सिपाही नें उसे देखकर पूछा। अरे इतनी देर से क्या ढूंढ़ रहा है नशे वाज—सिपाही जी आपके लिये ही ढूंढ़ रहा हूं। सिपाही—हाँ मेरे लिये, क्या ढूंढ़ रहा है ? नशेवाज—जी 10 रु. का नोट है, अपने लिये न सही, आपको देने के लिये ही काम आता। सिपाही - क्या तुम्हें मालूम है नोट यहीं गिरा है ? नशेवाज - जी गिरने का तो मुझे मालूम नहीं, मगर ढूंढ़ने में क्या हर्ज है ?

(70) एक साहव ने अपने किसी मित्र का दरवाजा खडकाया। अन्दर से उसकी लड़की ने दरवाजा खोला ही था कि पिता जी ने दूसरे कमरे से पूछा, बेटी कौन है ? बेटा—पिता जी वो अंकल आए हैं। पिता

एव सम्बन्धी आगतः। पिता-कः सम्बन्धी ? वालिका-स एव सम्बन्धी यः इतः भोजनं कृत्वा गच्छति, पश्चात् तं प्रति भवान् वदति। तं प्रति किं वदामि अहम् ? वालिका—इदमेव यत् सः नितान्तं गर्दभः इव खादति।

(71) एकः भृत्यः कञ्चित् स्वामिनम् एत्य अब्रवीत्-स्वामिन् माम् भृत्य रूपेण रक्षतु अहम् भवन्तं सेविष्ये। स्वामी-किं वर्तनं ग्रहीष्यसि ? भृत्यः—यदपि भवते रोचते ददातु। स्वामी—सम्यक्, परं मया सह एकः समयः कर्तव्यः। भृत्यः—सः किमस्ति ! स्वामी-यदहं कार्यं सूचीम् ददामि तदनुसारमेव करोतु अन्यथा वर्तने कर्तनं स्यादिति। भृत्यः—वरम्। एकदा दुर्घटनायाम् स्वामिनः हस्तः वहित्र्याः अधस्तात् आगतः। स्वामी भृत्यम् आक्रन्दत् भो माम् निस्सारय। भृत्यः—तिष्ठतु स्वामी, अहम् कार्यसूचीम् पश्यामि। स्वामिन् कार्यसूच्याम् एतत् कार्यम् भवता लिखितम् नैव। स्वामी—रे मे हस्तच्छेदः जातः, त्वम् सूचीम् भणसि। भृत्यः-नास्ति वार्ता यदि ते हस्तच्छेदः जातः, मम वर्तनच्छेदस्तु न भविष्यति।

(72) रेलशकट्याम् एकेन महानु भावेन स्वपत्न्याः हस्तः गृहीतः आसीत्। सर्वे जना। आश्चर्य—अभिभूताः आसन् यत् तेन एतावता बलेन स्वपत्न्याः हस्तः कथं गृहीतः। एकः जनः तम् अपृच्छत् भ्रातः भवता स्वपत्न्याः हस्तः वलपूर्वकं कथं गृहीतः ! पतिः—किम् भवन्तः शकट्याम् लिखितां सूचनाम् न पठन्ति ? जनः—सा सूचना कास्ति ? पतिः—पश्यन्तु तावत् सम्मुखे एव लिखितम् अस्ति—स्वं वस्तु स्वयमेव रक्षतु।

(73) एकः गुरुः स्वम् अलसं शिष्यम् अवदत्—उत्थाय पश्य वहिः वर्षा भवति किम् ? शिष्यः—एषा विडाली अधुनैव वहिश्तः

कौन से अंकल ? बेटी-वही अंकल जो यहां से खाना खा जाते हैं तो पीछे आप उनके लिये बोलते हैं। पिता—गधे की तरह खाता है ।

(71) एक नौकर किसी मालिक के पास पहुंच कर बोला—मालिक मुझे नौकर रख लें मैं आपकी सेवा करूंगा। मालिक—क्या तनखा लेगा ? नौकर—जो आप उचित समझें दे देना। मालिक—ठीक है, पर मेरी एक शर्त है। नौकर - क्या ? मालिक - जो मैं कामों की लिस्ट दूं वैसा ही करना नहीं तो तनखा कट जायगी। नौकर - ठीक है। एक दिन एक्सीडेन्ट में मालिक का हाथ मोटर साइकल के नीचे आ गया। मालिक नौकर से चिल्लाया अबे मुझे निकाल। नौकर - ठहरो मालिक मैं कामों की लिस्ट देख लूं। लिस्ट में आपने यह काम लिखा ही नहीं है। मालिक - अरे मेरा हाथ कट गया तुझे लिस्ट की पड़ी है। नौकर कोई बात नहीं, तुम्हारा हाथ कट गया तो क्या हुआ ? मेरी तनखाह तो नहीं कटेगी।

(72) रेल गाड़ी में एक साहब ने अपनी पत्नी का हाथ पकड़ रखा था। सब लोग हैरान कि इसने अपनी पत्नी का हाथ इतने जोर से क्यों पकड़ रखा है। एक आदमी ने पूछ ही लिया भाई आपने पत्नी का हाथ जोर से क्यों पकड़ रखा है ? पति—आपने गाड़ी में लिखी सूचना पर ध्यान नहीं दिया। आदमी—कौन सी सूचना ? पति - ये देखो सामने ही लिखा है—अपने माल की स्वयं रक्षा करें।

(73) एक गुरु अपने आलसी चेले से बोला—उठकर देखना, बाहर वर्षा हो रही क्या ? चेला—यह बिल्ली अभी बाहर से आई है, इसकी पीठ

आगता, अस्याः पृष्ठे हस्तेन स्पर्शं करोतु तदा ज्ञास्यति भवान्। गुरुः- अस्तु उत्थाय दीपकं निर्वापय। शिष्यः—गुरो ! नेत्रे निमीलयतु, तर्हि दीपकं निर्वापितम् एव अवगच्छतु। गुरुः (आवेशे) अवदत्—अस्तु उत्थाय कपाटौ तु अवरोधय। शिष्यः—गुरो एतादृशम् अत्याचारं कथं करोति ? द्वे कार्ये मया कृते एतदेकं भवान् एव करोतु।

(74) एकः विद्यालय वालकः स्वमात्रा सह मन्दिरम् अगच्छत् भगवद् विग्रहं च समक्षे हस्तौ सम्मेल्य अवदत्—भगवन्। मुम्बा-पुरीम् भारतस्य राजधानीम् करोतु। अम्बा—कथं पुत्र ! एवम् कथम् याचसे ? पुत्रः—यतोहि अहम् उत्तरपत्रे एवमेव लेखित्वा आगतोऽस्मि।

(75) एकः वालकः अपरम्—तत्र तु सर्वत्र सुन्दरता सुखम् चैवास्ति, स्वर्गं एव केवलम्। किम् त्वम् तत्र स्वर्गं गन्तुम् इच्छसि ? अपरः—न भ्रात न। एतावतं महत्सुखम् परित्यज्य कोऽपि ततः पृथिव्याम् आगन्तुं नेच्छति। मम पितामहः स्वर्गं गतः परमधुना पर्यन्तमपि न परावृत्तः।

(76) एकः अध्यापकः स्वर्गम् अति प्रशंसन् वालकान् अपृच्छत्—वालाः ! हस्तान् उत्थापयत, युष्मासु कः कः स्वर्गं गन्तु-मिच्छति ? मालतीम् विहाय सर्वे हस्तान् उच्चैः अकुर्वन्। अध्या-पकः—मालति ! किम् त्वम् स्वर्गं गन्तुं नेच्छसि ? मालती—श्रीमन् गन्तुं तु अहमपि इच्छामि परम् अम्बा अकथयत्। अध्यापकः— किम् अवथयत् सा ? मालती—सरलमेव गृहम् आगच्छ अन्यथा पादौ त्रोटयिष्यामि।

पर हाथ फिरा कर देख लें। मालूम हो जायगा। गुरु—अच्छा उठकर दीपक तो वन्द कर दे चेला—गुरू आंखें वन्द कर लो, वस समझो कि दीपक वन्द हो गया। गुरु झल्ला कर बोला—अच्छा उठकर किवाड़ तो वन्द कर दे। चेला—गुरु ऐसा अत्याचार करते हो। दो काम मैंने कर दिये, ये एक काम आप ही कर लो।

(74) एक बालक अपनी मां के साथ मन्दिर गया और भगवान् की मूर्ति के सामने हाथ जोड़कर बोला—भगवान् बम्बई को भारत देश की राजधानी बना दो। मां—क्यों बेटे, ऐसा क्यों मांगते हो? बेटा—क्योंकि मैं पर्चे में ऐसा ही लिखकर आया हूं।

(75) एक बालक दूसरे से—वहां तो सब ओर सुन्दरता और सुख ही सुख है बस स्वर्ग है। क्या तुम उस स्वर्ग में जाना चाहते हो। दूसरा बालक—ना बाबा ना। इतने भारी सुख को छोड़कर कोई वापस नहीं आना चाहता पृथ्वी पर। मेरे बाबा स्वर्ग गये थे, जो अभी तक नहीं लौटे।

(76) एक अध्यापक ने स्वर्ग की भरपूर प्रशंसा करते हुए पूछा—बच्चो हाथ उठाओ तुम में से कौन 2 स्वर्ग जाना चाहता है? सबने हाथ उठा दिया पर मालती ने नहीं उठाया। अध्यापक—मालती क्या तुम स्वर्ग जाना नहीं चाहती? मालती—सर जाना तो मैं भी चाहती हूं पर ममी ने कहा था। अध्यापक—मालती—कहा था कहा था। को ही कि सीधे घर आना, नहीं तो टांटें तोड़ दूंगी।

(77) एकः महोदयः अपरम्—तव घटिका रेल स्थानेन मिलिता अथवा दूरवाणी स्थानेन । अपरः—महोदय । एताभ्याम् उभाभ्यामेव न मिलिता अपितु मम घटी श्वसुरालयेन मिलिताऽस्ति ।

(78) पिता पुत्रम्—पुत्र ! वद रामराज्ये जनाः स्व स्व गृहेषु तालकं कथं न आरोपयन्ति स्म ? पुत्रः--पितृमहोदय ! वार्तेयम् अस्ति यत् तदा तालकस्य आविष्कार एव न जातः ।

(79) एका युवती चलचित्रगृहस्य प्रवन्धकम् अवदत्-महोदय ! का छविः संलग्ना अस्ति ? प्रबन्धकः-"आगच्छ प्रेम कुर्वं" । युवती-असभ्य ? प्रवन्धकः—न न असभ्य न, 'आगच्छ प्रेम कुर्वं' इति । परम् अग्रिमे सप्ताहे अस्मिन्नेव छवि गृहे ।

(80) एकः मद्य सेवी रात्रौ मार्गे भ्रमन् प्रवाहिकायाम् अपतत् तस्य द्वितीयः सहचरः तम् येन केन प्रकारेण वहिर् आनयत् । वहिर् आगत्य-मद्यसेवी अवदत्-समितिजनाः अपि अति विचित्राः सन्ति । पश्यतु तावत् दिने तु एताः प्रवाहिकाः (नालिकाः) मार्गस्य प्रान्ते कुर्वन्ति रात्रौ च मार्गस्य मध्ये स्थापिताः ।

(81) आरक्षी अधिकारी रक्षकम्—त्वम् चौरम् अन्वधावः, किमपि हस्ते लग्नम् ? रक्षकः—आम् हस्ते तु लग्नः, परम् यत्र हस्ते लग्नः तत्र अंगुलीनाम् मुद्रा अपि विद्यते । अधिकारी (प्रसन्नो भूत्वा)—अस्तु वद चौरस्य अंगुलीनाम् मुद्रा कुत्र लग्नाऽस्ति ? रक्षकः—पश्यतु मे कपोले वर्तते ।

(77) एक साहब दूसरे से—तुम्हारी घड़ी रेलवे स्टेशन से मिली है या रेडियो स्टेशन से ? दूसरा- जी दोनों में कहीं से नहीं, मिली बल्कि मेरी घड़ी ससुराल से मिली हैं।

(78) पिता (बेटे से)—बेटे बताओ राम के राज्य में लोग अपने घरों में ताला क्यों नहीं लगाते थे ? बेटा—जी पिता जी बात यह है कि उस समय ताला बना ही नहीं था।

(79) एक लड़की सिनेमा हाल के मैंनेजर से—मैंनेजर साहब कौन सी फिल्म लगी है। मैंनेजर—आओ प्यार करें। लड़की—(गुस्से में) बदतमीज। मैंनेजर—बदतमीज नहीं, 'आओ प्यार करें' मगर अगले सप्ताह से इसी हाल में।

(80) एक अफीमची रात को सड़क पर घूमते हुए नाली में गिर गया। उसके दूसरे साथी ने बड़ी मुश्किल से उसे बाहर निकाला। बाहर आकर अफीमची बोला—कमेटी वाले भी बड़े वैसे (अजीब) आदमी हैं। देखो न, दिन में तो इन नालियों को सड़क के किनारे कर देते हैं और रात में सड़क के बीचों बीच रख दी हैं।

(81) पुलिस इन्सपेक्टर सिपाही से—तुम चोर के पीछे 2 दौड़े थे क्या हाथ लगा ? सिपाही—जी हाथ तो लगा हैं। पर जहां उसका हाथ लगा है, वहां अंगुलियों की छाप भी है। इन्सपेक्टर (प्रसन्न होकर) अच्छा बताइये चोर की उंगलियों की छाप कहाँ लगी है। सिपाही—सर मेरे गाल पर।

(82) पिता स्वं पुत्रम्—वत्स ! केचित् कथयन्ति यत् प्रत्येकः मनुष्येः वानरस्य सन्ततिः अस्ति। पुत्रः - पितृ महोदय ! तदा तु अहमपि वानरस्य सन्ततिः अस्मि।

(83) एकस्मिन् साक्षात्कारे एकः अधिकारी एकं प्रत्याशिनम् - किं त्वम् मद्यम् पिबसि ? प्रत्याशी—न महोदय। अधिकारी—किं त्वम् धूम्रपानं करोषि ? प्रत्याशी—सर्वथा नैव। अधिकारी—तव कः स्वभावः। प्रत्याशी —केवलम् एवमेव न न करणम् इति।

(84) माता पुत्रम्—पुत्र ! अद्यत्वे महार्घता कारणेन सर्वं वस्तूनाम् मूल्यानि उपरि गच्छन्ति। किमपि वस्तु ईदृशम् अस्ति किम्, यत् नीचैः गच्छति ? पुत्रः—कथन्न मातः ! मम परीक्षायाः अंकान् एव पश्यतु ये प्रतिदिनम् नीचैः एव यान्ति।

(85) पिता पुत्रम् सम्बोधयन्—पुत्र ! प्रातः मार्गाः स्वच्छाः शान्ताः च भवन्ति भ्रमणार्थं गच्छतु। अनेन स्वास्थ्य-लाभस्तु भवत्येव कदापि आर्थिक लाभोऽपि भवति। पुत्रः—पितः। भ्रमणेन आर्थिक लाभः कथं भवति ? पिता-पश्य प्रतिवेशी वालः ह्यः प्रातः भ्रमणार्थम् अगच्छत् सः शतरुप्यकस्य पतितं नाणकम् अलभत। पुत्रः—ओह एषा वार्ताऽस्ति मह्यम् तु प्रातः भ्रमणेन आर्थिकहानिः एव जाता। पिता-किम् अभवत् पुत्र ! पुत्रः-पितः अहमपि ह्यः प्रातः भ्रमणार्थम् अगच्छम्। तद् रुप्यकशतं ममैव पतितम्।

(86) चलत्याम् रेल शकटयाम् यात्रापत्र-निरीक्षकः एकं यात्रिणम् अवदत्—महाशय ! भवद् यात्रापत्रम् तु केवलम् रेल-स्थापं यावत् गन्तुम् अस्ति। यात्री-सम्यम् उक्तम् भवता। अहमपि तु केवलम् अग्रिम रेलस्थापमेव गच्छामि।

(82) पिता बेटे से---बेटा, कुछ लोग कहते हैं कि मनुष्य बन्दरकी सन्तान है। बेटा—पिता जी तब तो मैं भी बन्दर की सन्तान हूं।

(83) इण्टरव्यू में आफीसर एक उम्मीवार से—क्या तुम शराब पीते हो ? उम्मीदवार - नहीं सर। आफीसर - क्या तुम सिगरेट पीते हो ? उम्मीदवार—बिलकुन नहीं सर। आफीसर—तुम्हारी आदत क्या है ? उम्मीदवार—सर बस इसी प्रकार इनकार करना।

(84) मां बेटे से—बेटा आज कल महगाई होने से सभी चीजों के दाम ऊंचे जा रहे हैं। क्या कोई ऐसी चीज भी है जो नीचे जा रही हो। बेटा—क्यों नहीं माँ। मेरे परीक्षा के नम्बर ही देख लो जो दिनों दिन नीचे को जा रहे हैं।

(85) पिता पुत्र को समझाते हुए—बेटा प्रातः सड़कें साफ और सुन सान होती हैं। घूमने जाया करो। इससे स्वास्थ्य लाभ होता ही है कभी 2 आर्थिक लाभ भी हो जाता है। बेटा—पिता जी इससे आर्थिक लाभ कैसे होता है ? पिता—देखो न, कल पडौसी का लड़का सवेरे घूमने गया था, उसे 100 रु. का नोट पड़ा मिल गया। बेटा—ओह तो ये बात है, मुझे तो प्रातः घूमने से आर्थिक हानि हो गई। पिता—क्या बात हुई बेटे ? बेटा—पिता जी कल मैं भी सवेरे घूमने गया था वे सौ रुपये मेरे ही गिर गए थे।

(86) चलती हुई रेल गाड़ी में टिकट चैकर एक यात्री से बोला—महाशय आपका टिकट तो केवल प्लेट फार्म तक जाने का है। यात्री—विलकुल ठीक है साहब ! मैं भी तो केवल अगले प्लेट फार्म तक ही जा रहा हूं।

(87) एकः युवकः चतुष्पथे अतिष्ठत्, तदैव एकतः धावित्वा आगतेन आरक्षी अधिकारिणा पृष्टः—सोहनः कः अस्ति स कुत्र अगच्छत् ? युवकः—ममैव नाम सोहनः अस्ति। अधिकारी—अस्तु एषा वार्ता, त्वमेव मोचयित्वा धावितः। अधिकारी तं भृशम् अताडयत् अगच्छत् च। युवकः उच्चैः अहसत्। तत्रस्थाः जनाः अपृच्छन्-का वार्ता, त्वम् ताडितः अपि हससि ? युवकः—सोहनः अहम् नास्मि, सोहनः कश्चिद् अन्य एव। यूयम् अपश्यत, अहम् तम् आरक्षी-अधिकारिणं किमिव मूर्खम् अकुर्वम्।

(88) एकस्य मल्लस्य कार यानम् कस्यचित् दुर्वलस्य स्कूटर यानेन सह टंकितम्। मल्लः क्रोधे दुर्बलं जनम् अगृह्णात् एकस्मिन् च लघुवृत्ते स्थापयित्वा तम् अकथयत्—यावदहं तव स्कूटरयानं संपूर्णं न त्रोटयामि तावत् त्वम् एतस्मात् वृत्तात् वहिर्न आगच्छ। मल्लः महत् पाषाणेन कुट्टयित्वा तस्य यानं चूर्णम् अकरोत्, परं दुर्बलः जनः मध्ये मध्ये उच्चैः हसति स्म। मल्लः तस्य पूर्णं यानं विभज्य तम् अपृच्छत्—वद त्वम् मध्ये मध्ये कथं हससि स्म ! दुर्बलः अवदत्—मल्ल महोदय ! सत्यवदनेन तु न मारयिष्यति भवान् ? मल्लः—नैव, वद का वार्ता आसीत् ? दुर्बलः—मल्ल महोदय ! यदा भवान् यानं त्रोटयति स्म तदाऽहं वहुवारं वृत्ताद् वहिः अगच्छम्, परं त्वया न ज्ञायते। एतस्याम् एव भवद् मूर्खतायां हसामि स्म।

(89) कश्चिद् एकः अधिकारी स्वकार्यात् निवृत्ति पत्रम् अयच्छत्। निवृत्तिपत्रम् अचिरमेव स्वीकृतम् अभवत् तदा सः स्वामिनः समीपम् आज्ञां ग्रहीतुम् अगच्छत्। स्वामी उवाच-भ्रात तव न्यूनता अस्माभिः चिरम् स्मरिष्यते। त्वम् सर्वथा अस्माकम् पुत्रवद् आसीः। अधिकारी-एषा भवत्कृपैव वर्तते यदेवं माम्

(87) एक युवक चौराहे पर खड़ा था कि एक ओर से भाग कर आते हुए हवलदार ने पूछा—सोहन कौन है वह किधर गया ? युवक—जी मेरा नाम सोहन है। हवलदार—अच्छा ये वात है, तू ही छुड़ा कर भागा है। हवलदार ने उसकी खूब पिटाई की और चला गया। युवक जोर 2 से हँसने लगा। वहां खड़े लोगों ने पूछा—क्या वात है तुम पिट कर भी हंस रहे हो ? युवक—सोहन मैं नहीं हूं। सोहन कोई और है। देखा मैंने हवलदार को कैसा बुद्धू बनाया।

(88) एक पहलवान की कार किसी दुवले स्कूटर वाले से टकरा गई। पहलवान ने गुस्से में दुवले आदमी को पकड़ लिया और एक छोटा गोल घेरा वनाकर उसमें उसे खड़ा करके कहा जब तक मैं तुम्हारा पूरा स्कूटर न तोड़ डालूं तुम घेरे से वाहर नहीं निकलना। पहलवान बड़ा पत्थर भार 2 कर स्कूटर को चकना चूर कर रहा था। परन्तु दुवला आदमी बीच 2 में जोर से हंस पड़ता था। पहलवान ने पूरा स्कूटर तोड़ कर उससे पूछा, बता तू बीच 2 में क्यों हँस रहा था ? दुवला वोला—पहलवान जी सच बोलने पर मारोगे तो नहीं ? पहलवान—नहीं, वताओ क्या वात थीं। दुवला—पहलवान जी जब आप स्कूटर तोड़ रहे थे तो मैं कई वार घेरे से वाहर निकल गया और आपको पता भी नहीं लगा। मैं आपकी इसी मूर्खता पर हंस रहा था।

(89) एक अफसर ने अपने काम से इस्तीफा दे दिया इस्तीफा तुरन्त मंजूर हो गया तो वे अपने मालिक से विदा लेने गए। मालिक वोला—भाई तुम्हारी कमी हमें सदा याद आती रहेगी। तुम बिलकुल हमारे बेटे के समान रहे हो। अफसर—आपकी कृपा है जो मुझे आप ऐसा समझते हैं। मालिक—तुम में वे सभी विशेषताएं हैं जो मेरे बेटे में हैं।

मन्यन्ते । स्वामी—त्वयि ताः सर्वाः विशेषताः सन्ति याः मदीय पुत्रे सन्ति । अधिकारी—स्वामिन् कथयतु तावत् काः काः विशेषताः सन्ति भवत्पुत्रे । स्वामी-सः सर्वथा तन्द्रः, मूढः, कापुरुषः एवम् कृतघ्नः अस्ति ।

(90) एका श्रीमती सज्जामञ्चे उपविश्य दर्पणे पश्यती वदने रागान् लेपयति स्म तदैव पतिदेवः स्वहस्ते कूर्चकं संगृह्य कक्षे स्वच्छतां रागादिकं वा कुर्वन् अवदत्—अहन्तु प्रतिदिनम् एताम् सज्जाम् रागादिकं वा कुर्वन् सर्वथा तुदितोऽस्मि । श्रीमती-भवान् तु अहरहः इदमेत प्रतिवेदनं करोति, मनाक् मामपि पश्यतु अहम् दैनन्दिनं फेनिकाम् चूर्णादिकं वा स्वमुखे करोमि । यदि कुत्रापि गमनीयम् स्यात् तदा तु दिने वहु वारम् अपि क्रियते । किम् कदापि मया त्वाम् प्रतिवेदनं कृतम् ?

(91) एकः द्वितीयम्—श्रुतम् अस्ति यत् एकस्मिन्देशे षष्टि प्रतिशतं जनेभ्यः शिरोवेदना वर्तते । परम् विधवाभ्यः शिरः पीडा न तिष्ठति । द्वितीयः—कथमिव ? प्रथमः—यतः याः महिलाः स्वपतीनाम् जीवनसमये सदैव शिरः पीडाम् अनुभवन्ति स्म ताः एव पतीनाम् निधने सर्वथा स्वस्थाः दृश्यन्ते । द्वितीयः—आम् सम्यगेव, शिरः—पीडा तु गता एव ।

(92) द्वे सख्यौ स्व तृतीयायाः सख्याः विवाहे अगच्छताम् । तर्हि प्रथमा अवदत्—वरस्तु अतीव अशोभनः, सख्या अयं कथं चयितः ? द्वितीया (शनैः)—सा तु एनम् प्रथम दृष्टयाम् एव चयितः प्रथमा-कथमेतत् ? द्वितीया—आवयोः सखी एनम् अधिकोषात् लक्षरुप्यकाणिग्रहण समये चयितः ।

अफसर—मालिक क्या 2 विशेषताएं हैं आपके पुत्र में जरा वताइये तो।
मालिक—विलकुल सुस्त, बुद्धू, कायर और कृतघ्न।

(90) एक श्रीमती जी ड्रेसिंग टेवल पर बैठकर शीशे में देखकर चेहरे पर रंग पोत रही थी। तभी पतिदेव अपने हाथ में कूची लेकर कमरे में सफाई और रंग रोगन करते हुए वोले—मैं तो रोज 2 की इस सजावट और रंग रोगन करने से तंग हो गया हूं। श्रीमती जी—आप तो रोज 2 यही शिकायत करते रहते हैं। जरा मुझे भी तो देखिये, मैं रोजाना क्रीम पोडर आदि करती रहती हूं और कहीं जाना हो तो दिन में कई वार भी करना पड़ता है। क्या मैंने कभी तुम से शिकायत की?

(91) एक ने दूसरे से-सुना है कि देश में 60 प्रतिशत लोगों को सिर दर्द रहता है परन्तु विधवा स्त्रियों को सिर दर्द नहीं रहता। दूसरा—भला क्यों? पहला—जो महिलाएँ अपने पतियों के जीवित रहते हुए सदा सिर दर्द से पीड़ित रहती थी, वे पतियों के मरने पर विलकुल स्वस्थ देखी जाती हैं दूसरा—हां ठीक तो है सिर दर्द जो चल गया।

(92) दो सहेलियां अपनी तीसरी सहेली के विवाह पर गई तो पहली वोली—दूल्हा तो बड़ा वदसूरत है सहेली ने इसे कैसे पसन्द कर लिया? दूसरी—(धीरे से)—अरी उसने तो इसे पहली नजर में ही चुन लिया था। पहली—अरी यह कैसे हुआ दूसरी—हमारी सहेली ने इसे वैंक में 1 लाख का चैक भुनाते समय पसन्द किया।

(93) एकः पतिः स्वपत्न्याः भोजनस्य अतीव प्रशंसाम् अकरोत्। पत्नी अवदत्—भवते मदीयं पक्तं भोजनं रोचते तर्हि अहम् धन्या ऽस्मि। पतिः—सर्वथा धन्या। युद्ध समये सैनिकेभ्यः नितान्तम् एतादृशम् एव ज्वलितम् अपक्वम् वा भोजनम् मिलति।

(94) एकः शिक्षकः पत्रम् लेखित्वा कस्यचित् छात्रस्य गृहम् अप्रेषयत् छात्रस्य च पितरम् प्रतिवेदनम् अकरोत्। अन्येद्युः पिता आगत्य अध्यापकम् अपृच्छत्—किमेतत्पत्रम् भवतैव लेखितम्? अध्यापकः-आम्। पिता-तर्हि अस्मिन् पत्रे किं लेखितम् पठित्वा कथयतु। अस्पष्ट—लिपि कारणात् अध्यापकः अतीव कठिनतया पत्रम् अपठत् अवदत् च – अस्मिन् पत्रे भवते इदमेव प्रति-वेदितम्, यत् भवतः बालस्य लिपिः समीचीना नास्ति।

(95) दीपावली दिवसः आसीत्। राजू वारं वारम् एव मिष्टान्नं खादन् आसीत्। तस्य माता अवदत्—पुत्र! अलम्, अधिकेन मिष्टान्न भक्षणेन हानिः भवति। पुत्रः—अम्बे! मिष्टान्न भक्षणेन कीदृशी हानिः जायते। माता-मिष्टान्नम् दन्तेषु संलग्नं भवति। तेनैव दन्ताः विकृताः भवन्ति। पुत्रः—सम्यक्, आनय आनय मिष्टान्नम्, अधुना अहम् दन्तै एव न लागयिष्यामि।

(96) एकः बालकः एवं पितामहम् अवदत्-पितृमह! भवत् शिरसि एकः रोगस्तु भविष्यति एव न। पितामहः-कस्तावत् पुत्र! पौत्रः—महोदय वाल-त्रोटन रोगस्तु वालैः (केशैः) भवति, परम् भवतः शिरसि तु वालाः एव न सन्ति।

(93) एक पति ने अपनी पत्नी के खाने की खूब ही प्रशंसा की। पत्नी बोली—तुम्हें मेरा बनाया खाना पसन्द आया मैं धन्य हो गई। पति जी बिलकुल धन्य। युद्ध के समय भी सिपाहियों को बिलकुल ऐसा ही कच्चा पक्का खाना मिलता है।

(94) एक अध्यापक ने किसी लड़के के घर पर लिखकर पत्र भेजा और लड़के के पिता को शिकायत की। दूसरे दिन पिता ने अध्यापक से पूछा क्या यह पत्र आपने ही लिखा है। अध्यापक-हां। पिता—तो इस पत्र में पढ़कर तो बताइये क्या लिखा है? लिखाई ठीक नहीं थी, अतः अध्यापक ने बड़ी मुश्किल से पढ़ा और कहा कि इस पत्र में आपको यही शिकायत लिखकर भेजी गई है कि आपके लड़के की लिखाई बहुत खराब है।

(95) दीवाली का दिन था। राजु बार 2 मिठाई खाए जा रहा था। उसकी माँ ने कहा—बस बेटे, अधिक मिठाई खाने से हानि होती है। बेटा—मां मिठाई खाने से कैसी हानि होती है. मां—मिठाई दांतों में लगती है और उससे दांत खराब हो जाते हैं। बेटा—ठीक है लाओ मिठाई अब की बार मैं दांत हीं नहीं लगाऊँगा।

(96) एक बालक अपने दादा से बोला—दादा जी आपके सिर में एक बीमारी तो होती ही नहीं होगी। दादा—कौन सी बीमारी बेटे? पोता—जी बाल-तोड़ की बीमारी। दादा वह कैसे? पोता—बालतोड़ की बीमारी तो बाल होने से होती है, सो आपके सिर पर तो बाल ही नहीं है।

(97) एकः पुत्रः स्वं खल्वाटं पितरम्-पितः ! अध्यापकः माम् अथकयत् यत् स्व पितरि एकाम् लोकोक्तिम् प्रयुज्य आनय । परम् एका लोकोक्तिः भवति सम्यक् न लगति किं करवाणि ? पिता-कथम्, ईदृशी का वार्ताऽस्ति ? पुत्रः—भवतः शिरसि वालाभावात् लोकोक्तिः घटते नैव । पिता-अन्ततः सा का लोकोक्तिः अस्ति याम् त्वम् मयि प्रयोक्तुम् इच्छसि । पुत्रः-भवतः शिरसि वालाभावात् अहम् कथं कथयानि यत् "पिता बाल बाल रक्षितः" इति ।

(98) एकः वालकः सरणितः आगच्छतीम् एकां स्थूल-महिलाम् पश्यन् आसीत् । महिला समीपे आगत्य तम् अब्रवीत्-त्वम् चिरात् माम् कथं पश्यसि ? बालकः—मम माता माम् अबोधयत् यत् स्थूल वाहनानि दृष्ट्वैव मार्गस्य पारं गच्छ ।

(99) एका सखी द्वितीयाम्-भगिनी पश्यतु तावत् ह्यः रात्रौ मम मुखम् अनावृतम् आसीत् तस्मिन् च एकः मूषकः प्रविश्य उदरे गतः । अधुनाऽहं किं करवाणि ? द्वितीया-अस्तु अधुना तु एकः एव उपायः अस्ति यत् जीविताम् मार्जारीम् आभ्यन्तरे प्रवेशय ।

(100) एक दम्पती कारयाने उपविश्य गच्छतः स्म । तदैव अग्रे एकः गर्दभः आगत्य अतिष्ठत् । पति-महाशयः अवदत्-पश्य समक्षे तव सम्बन्धी तिष्ठति । पत्नी सहज भावेन अवदत्-आम् सत्यम् एव, विवाहानन्तरम् सम्बन्धी जातः । पतिः—कथमिव ? पत्नी-कथम् किम् ? अहम् स्व-ज्येष्ठम् न जानामि किम् ?

(97) एक पुत्र अपने गंजे पिता से—पिता जी मास्टर जी ने कहा था अपने पिता पर एक मुहावरा प्रयोग करके लाओ सो एक मुहावरा आप पर ठीक नहीं बैठ रहा है, क्या करू ? पिता—क्यों, ऐसी क्या बात है ? बेटा—जी आपके सिर पर बाल न होने से मुहावरा घट ही नहीं रहा। पिता—आखिर वह कौन सा मुहावरा है जिसे प्रयोग करना चाहते हो ? बेटा—जी आपके बाल न होने से मैं कैसे कहूं कि "पिता जी बाल-2 बचे।"

(98) एक लड़का सड़क की ओर से आती हुई एक मोटी औरत को देखें जा रहा था। औरत ने पास आकर उससे पूछा—तुम बहुत देर से मुझे क्यों देखें जा रहे हो ? लड़का—मेरी मां ने समझाया था कि भारी वाहनों को देखकर ही सड़क पार करना।

(99) एक सहेली दूसरी से—बहन देखो न, कल रात को सोते समय मेरा मुह खुला रह गया और उसमें चूहा घुसकर पेट में जा पहुँचा, अब मैं क्या करू ? दूसरी—बस अब तो एक ही उपाय है कि जिन्दा बिल्ली को निगलजाओ।

(100) एक पति पत्नी कार में बैठे जा रहे थे कि सामने एक गधा आ खड़ा हुआ। पति महाशय बोले—देखो सामने तुम्हारा एक रिश्तेदार खड़ा है। पत्नी सहज भाव से बोली—हां ठीक तो है, शादी के बाद रिश्तेदार बन गया है। पति—कैसे ? पत्नी—कैसे क्या, मैं अपने जेठ को भी नहीं पहचानती ?

मुख्य व्यञ्जनान्त रूपार्थं चित्रम् (1)		10/-
मुख्य व्यञ्जनान्त रूपार्थं चित्रम् (2)		10/-
उपसर्गं, उपपद, ज्ञान चित्रम्		10/-
सर्वनाम पद रूपार्थं चित्रम्		5/-
सामान्य विशेषण, रूपार्थं चित्रम्		11/-
संख्या " " "		10/-
अव्ययार्थं चित्रम् (संस्कृत-हिन्दी)		10/-
" " (हिन्दी-संस्कृत)		10/-
मुख्य दशगणी धातु रूप चित्रम्	(1)	10/-
" " " "	(2)	10/-
रसालंकार छन्दो दोपिका (हिन्दी)		5/-
अनादिवाक् (त्रैमासिक पत्रम्) वा. शु.		16/-

संस्कृत सेवा संस्थान दिल्ली (पंजी०)

59/8 मध्यमार्ग, तुगलकाबाद विस्तार,

नव दिल्ली-19